पंचम अध्याय

रांगेय राघव के आलोच्य उपन्यासों की नारियों का जीवन दर्शन

प्रस्तावना

1. जीवन के प्रति दृष्टिोण
2. ईश्वर सम्बन्धी विचार
3. भाग्य के बारे में विचार
4. कर्म - कर्म की स्थिति
5. समाज के बारे में विचार
    1. राजनीति
    2. साम्यवाद / मार्क्सवाद
    3. प्रेम
    4. विवाह
    5. विवाह बाह्य सम्बन्ध तथा नैतिकता

निष्कर्ष

पंचम अध्याय

५. रांगेय राघव के आलोच्य उपन्यासों की नारियों का जीवन दर्शन

प्रस्ताविका :

जीवन दर्शन

दर्शन एक साधारण शब्द है । सृष्टा और दर्शन में कोई अन्तर नहीं है । दर्शन दर्शक के साथ अपने आप आ जाता है । दर्शन में मताभिमत नहीं होता, न बुद्धि के प्रयोग की आवश्यकता होती है । उसका प्रकृत रूप अनन्त जिज्ञासा है । जिज्ञासा की कोई सीमा नहीं होती इसलिए जीवन में वह कुछ काम में सहायक बनता है किन्तु निश्चित मताग्रह नहीं बन पाता । " साधारण भाषा में ' दर्शन ' का अर्थ है ' देखना ' दार्शनिक प्रक्रिया का उद्देश्य समस्त ब्रम्हाण्ड को एक साथ देखना अथवा सम्पूर्ण दृष्टि प्राप्त करना कहा जा सकता है । "[1] अतः सत्य की खोज करना ही दार्शनिक का प्रमुख लक्ष्य है । वह वस्तु का मूल्यांकन नहीं करता बल्कि अन्तर्गत सत्य का साक्षात्कार करने का प्रयास करता है । जीवन के हर क्षेत्र का दार्शनिक विवेचन करता है । मानव जीवन की समग्रता का बोध प्राप्त करने के लिए जीवन के विविध पहलुओं का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है जैसे — धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक आदि । दार्शनिक को नीरस व्यक्ति तथा दर्शन को गूढ़ और जटिल समझना अनुचित होगा । वैसे तो हर व्यक्ति अपनी बुद्धि की शक्ति के बल पर संसार की विविधता एवं प्रकृति में छिपे रहस्य को जानने की कोशिश करता है । व्यक्ति व्यक्ति में भेद रहता है इसलिए उनकी दृष्टि में विभिन्नता होना स्वाभाविक बात है । प्रत्येक व्यक्तिका जीवन का द्वंद्व, संसार का यथार्थ, ईश्वर का अस्तित्व, समाज, आदि के बारे में अपना एक अलग दृष्टिकोण होता है । दार्शनिक कोई भी सामान्य व्यक्ति होता है । आम आदमी की तरह वह भी मानव समाज में अपना जीवन यापन करता है । वह समाज के सुख-दुःख पीड़ा से परिचित होता है । सामान्य व्यक्ति का जीवन के सम्बन्ध में विशिष्ट दृष्टिकोण होते हुए भी सामान्यतः सभी

व्यक्तिका दृष्टिकोण इतना प्रौढ़ नहीं होता कि वे जगत् को अपनी दृष्टि प्रदान कर सके तथा अपने विचारों से मानव जाति में नई चेतना उत्पन्न कर सके । अदार्शनिक और दार्शनिक में स्पष्ट सीमा निश्चित करना असम्भव है । दार्शनिक अपनी मान्यताओं को सुनियोजित रूप से प्रकट करता है । अतः जीवन के प्रति विशिष्ट दृष्टि के द्योतक के रूप में दर्शन का प्रयोग होता है । कोई भी व्यक्ति चाहे वह सामान्य हो, साहित्यिक हो, मनोवैज्ञानिक अथवा वैज्ञानिक हो सब में संवेदना एवं मानवीयता विद्यमान रहती है ।

।) जीवन के प्रति दृष्टिकोण

आलोच्य उपन्यास ' कब तक पुकारूँ ' और ' मुर्दो का टीला ' चित्रित नारियों का जीवन के सम्बन्ध में उनका अपना - अपना दृष्टिकोण है ।

बेला (कब तक पुकारूँ) अपने पीड़ित जीवन के प्रति खुश है । अपना तन बेचकर अपनी गृहस्थी चलाती है । उसके जीवन में ऐसे अनेक अवसर आ जाते हैं जिससे वह अपनी स्थिती बदल सकती थी । किन्तु परिवार के वास्ते ऐसे अवसरों को ठुकरा देती है । बेला अपने जीवन को पहचानती है तथा ऐसे सपनों में जीना नहीं चाहती जिसका सहारा कल्पनाएँ हैं । वह वास्तव में जीने की आग्रही है । इसलिए वह अपने में परिवर्तन नहीं चाहती । बेला अपने पति एवं बेटे को समझाती है कि हम गरीब है अतः हमे आसमाँ के ख्वाब देखने नहीं चाहिए । एक नटनी का बेटा नट ही होगा । लेकिन दोनों भी उसकी बात नहीं मानते तथा खुद को ठाकुर समझते हैं । बेला गरीब है मगर स्वाभिमान से जीवन बिताती है । उसे पति और पुत्र का बर्ताव स्वीकार नहीं है । जीवन में आये हर दुःख एवं अपमान को बेला सहती है किन्तु पति और बेटे द्वारा हुई प्रताड़ना को वह बर्दाश्त नहीं कर सकती तथा स्वाभिमान की रक्षा के लिए बेला अपना जीवन नष्ट कर देती है । बेला किसी के दबाव में या बहकावे में आकर अपने जीवन तत्वों को नही बदल सकती ।

सौनो (कब तक पुकारूँ) की वृत्ति परोपकारी है । इस कारण वह अनाथ

सुखराम का स्नेह से पालन करती है । ठाकुर वंश से सम्बन्धित सुखराम के साथ अपनी बेटी प्यारी की शादी करने का फैसला करती है ताकि प्यारी अपने जैसा वेश्या व्यवसाय न कर ठाकुर की बहु की तरह समाज में इज्जत और सम्मान के साथ रहे ।[1] सौनो को ऊँची जाति की औरतों के प्रति जिज्ञासा है, जिसमें जीवन का सम्मान छिपा हुआ है । लेकिन इस विचार में चंद दिनों में परिवर्तन हो जाता है क्योंकि यह विचार कोरी कल्पना है । वास्तव में प्यारी को पाने के लिए दरोगा उनके परिवार को सताता है । अतः सौनो विवश होकर बेटी को उस नरक में धकेल देती है । वह प्यारी को समझाती है कि औरत को औरत का काम करने के लिए पति की इजाजत की आवश्यकता नहीं है । पति है तो जीवन में सबकुछ है । पति की सुरक्षा के लिए किसी पुरूष को अपना शरीर सौंपने में बुराई नहीं है । विधवा होने के पश्चात् सौनो सुखराम की ओर आकर्षित होती है । किन्तु प्यारी की फटकार से वह पीड़ित होकर कहती है -- " अभी तो मुझमें जोर है लाड़ली । और जब नहीं रहेगा किसी साठा-पाठा के घर जा रोटी ठोकूँगी । बेटी के घर रहकर अपनी इज्जत नहीं खोऊँगी ।[2] . सौनो अपने जीवन - यापन के लिए किसी पर आश्रित नहीं रहना चाहती । दामाद कमाई पर जी कर वह अपने जीवन के सम्मान को ठेस नहीं पहुँचाना चाहती । इसी लिए सौनो बेटी का घर छोड़कर किसी की रखैल बनकर रहती है । कठिनाइयों में भी सौनो अपने अस्तित्व को बनाएँ रखती है ।

प्यारी (कब तक पुकारूँ) का जीवन की ओर देखने का दृष्टिकोण स्वच्छंदी है। बचपन से ही वह मनचाहे ढंग से रहती है । प्यारी का जीवन उस तितली के समान है जो कई फूलोंपर बैठकर उसका आस्वाद लेती है । लेकिन सुखराम से विवाह होने के पश्चात् सुखराम के अंदर का ठाकुर उसे स्वच्छंद जीने की इजाजत नहीं देता । फिर भी प्यारी अपने पति की बातों को ठुकराकर अपने ढंग से आनंद उठा लेती है । प्यारी ने करनटों के शोषित जीवन को भोगा है, महसूस किया है । सामन्तवादी लोग सत्ता, अधिकार, धन के बलपर नीच जाति के लोगों को अपने गुलाम बनाकर उनका इस्तमाल करते हैं । प्यारी के मन में भी सत्ता, अधिकार, धन पाने की लालसा जाग जाती है ताकि अपनी जाति के लोग निर्भय रहे एवं शोषक लोगों से प्रतिशोध ले तथा अपनी जिन्दगी ऐशो आराम से गुजार सके । सुखराम के मना करने के बावजूद भी " तू तो चाहता है मैं ऐसेही

जूतियाँ खाती डोलूँ । " [3] कहकर प्यारी रूस्तमखाँ की रखैल बनना स्वीकार करती है । रूस्तमखाँ के घर रहकर, हुकूमत तथा ऐशो आराम की जिन्दगी पा कर कुछ दिन तो प्यारी खुश रहती है किन्तु कुछ ही समय में उसे वह सुखी जीवन अखरने लगता है । यौन बीमारी की वजह से वह स्वयं को हीन समझती है । प्यारी अपने जीवन के प्रति सोचती है कि सुखराम के साथ रहकर उसका जीवन असुरक्षित एवं आभावग्रस्त था । लेकिन रूस्तमखाँ के यहाँ उसे हर तरह का सुख मिल रहा है । फिर भी उसका लगाव सुखराम से है क्योंकि सुखराम के यहाँ आभाव के बावजूद भी वह सुखी थी, आजाद थी, खुलकर हँसती, खेलती, गाती थी । किन्तु रूस्तमखाँ के यहाँ सुख पाने के लिए उसे कैद में रहना पड़ रहा है । प्यारी का असली सुख सुखराम के साथ रहने में है । लेकिन वह विवश है । प्यारी अपने जीवन के इस कटु सत्य को जानती है कि जवानी समाप्त होते ही रूस्तमखाँ उसे निकाल देगा उस समय उसके जीवन का अन्तिम सहारा सुखराम होगा । प्यारी के समग्र नारी जाति के जीवन की विवशता के बारे में यह विचार है कि नारी अपने जीवन में कुछ भला-बूरा करती है उसके पीछे उसकी मजबूरी छिपी रहती है । प्यारी भी तो विवश होकर जीने के लिए अपना तन दाँव पर लगाती है । प्यारी साहसी, निर्भीक है तथा अपने जीवन मे आई बाधाओं से वह कमजोर एवं विचलित होकर जीवन को समाप्त नहीं करना चाहती बल्कि दुःखों को सहकर आत्मविश्वास के साथ जीवन पथ पर चलती रहती है । जीने के लिए वह किसी की सलाह को आवश्यक नही समझती । प्यारी जो चाहती है वही करती है । प्यारी के बर्ताव से सुखराम नाराज होकर उसे डाँटता है तभो वह उसे कहती है -- " इत्तीसी बात के लिए ! मरना मुझे नहीं आता । " [4] प्यारी अपना जीवन स्वाभिमान के साथ गुजारना चाहती है । कोई उसपर बेवजह अन्याय करे यह उसे बर्दाश्त नहीं होता । उसकी सोच क्रान्तिकारी है । रूस्तमखाँ के द्वारा सुनाई गयी गालियाँ और अपशब्द को वह चुप-चाप नहीं सह लेती बल्कि उसे फटकारती है । बाँके को भी समाप्त करने की कोशिश करती है । प्यारी संवेदनशील नारी है । कोई भी व्यक्ति तभी महान बनता है जब वह दूसरों की महानता को स्वीकारता है । प्यारी भी अपनी सौत कजरी का बड़प्पन का स्वीकार करती है । उससे अनोखा रिश्ता स्थापित कर देती है । अपने जीवन में प्यारी धन से ज्यादा परिवार के रिश्तों को (सुखराम, कजरी) महत्व देती है । पैसे तो उसके लिए साधन मात्र हैं । प्यारी अन्त तक अपने आत्मगौरव की रक्षा करती है और जीवन की ओर आशावादी दृष्टि से देखती है ।

कजरी (कब तक पुकारूँ) की दृष्टि मानवतावादी है । वह एक नटनी है । अतः उसमें जातीय संस्कार समाएँ हुए हैं । उसकी शादी अपात्र व्यक्ति कुर्री से होती है । जिससे वह अपने जीवन में खुश नहीं रह पाती । जीवन साथी के रूप में वह ऐसे पुरूष को चाहती है -- मरद वही जो लुगाई को बचाके रखे । " [5] सुखराम को अपने योग्य समझकर उसे अपने पति के रूप में स्वीकार करती है । कजरी के मन में अपनी सौत प्यारी के प्रति स्वाभाविक ईर्ष्याभाव पनपने लगता है । सुखराम की नजरों से प्यारी को गिराने के लिए तथा उसे नीचा दिखाने की हर तरह की कोशिश वह करती है । कजरी के विचार में प्यारी एक गिरी हुई औरत है, जो पैसों के लिए कुछ भी कर सकती है । यहाँ तक की अपने देवता समान पति को भी छोड़ सकती है । किन्तु प्यारी की हालत को जानकर कजरी के मन में प्यारी के बारे में जो ईर्ष्या थी उसके बजाय सहानुभूति उमड़ने लगती है । सुखराम की हो जाने पर कजरी अपने जीवन पथ को बदल देती है । आम नटनियों की तरह शादी के बाद भी वह स्वतंत्र है । फिर भी वह ऐसा नहीं करती बल्कि अपने आप को बन्धन में जकड़ देती है । वह बन्धन है पति-पत्नी का प्रगाढ़ विश्वास और एकनिष्ठता का । कजरी नटनी होने के बावजूद भी आदर्श भारतीय संयमी पतिव्रता नारी की भाँति अपना जीवन बिताती है । कजरी के पास जो कुछ है उसमें वह सुखी है । अपनी जरूरतों के लिए वह किसी से भी अपेक्षा नहीं करती, न ही अपने मन में धन दौलत की लालसा रखती है । सुखराम को भी यह यथार्थ के धरातल पर खड़ा कर देती है । बाँके द्वारा धूपो की इज्जत लूटना तथा सुखराम को लहुलुहान करना ये बातें कजरी सह नहीं पाती । वह बाँके को उसके पापों की सजा दे देती है । अपने सुहाग पर किसी तरह की आँच नहीं आने देती । प्यारी की मौत के पश्चात् कजरी के जीवन का एक सहारा टूट जाता है । किन्तु सहनशीलता के बल पर खुद को सँवार लेती है और बड़ी ही मुश्किल कठिनाइयों से सुखराम को भी उभारती है । कजरी के जीवन का एकमात्र आधार सुखराम ही है इसलिए वह उसे किसी मुसीबत में नहीं डालना चाहती । सुखराम के उपर प्रतिशोध का भूत सँवार हो जाता है । किन्तु कजरी अपनी वास्तविक स्थिती को जानती है कि अकेला निर्धन करनट सुखराम उन दरिंदो से नहीं लड़ सकता । वह सुखराम को समझने की कोशिश करती है । सुखराम की चिन्ता उसे सताती है । कजरी कहती है -- " कोई ऊँच जात होता, बड़ा आदमी होता तो असर भी पड़ता । तू नहीं रहेगा तो किसी का कुछ नहीं बिगड़ेगा, बस मेरी दुनिया अंधेरी हो जायेगी । "[6]

कजरी के विचार से पेट के लिए चोरी करना अच्छी बात नहीं है । वह सुखराम को भी सलाह देती है कि चोरी जैसे खतरों के कामों को छोड़कर किसी शहर में जाकर मजदूरी करके खुशी से अपना जीवन बिताएंगे । कजरी के अनुसार अपने जीवन - यापन के लिए किसी पर निर्भर नहीं रहना चाहिए । वह स्वयं भी कुछ काम करके सुखराम का हाथ बटोरना चाहती है । -- " क्यों ? मैं क्या बैठी बैठी खाऊँगी ? अरे तू देखियों, **मैं भी मजूरी करूँगी ।** " [7] सुखराम पर कोई स्त्री आसक्त हो या उसे चाहे यह बात कजरी बर्दाश्त नहीं करती । क्योंकि सुखराम ही उसका जीवन एवं सुख है । खड़गसिंह के टोली की एक स्त्री सुखराम पर आशिक हो जाती है और कजरी को मारने की कोशिश करती है । मगर कजरी उसके इरादों पर पानी फेर देती है । उसे मार-पीट करके घर से निकाल देती है । सुखराम का सूसन के कमरे में जाकर उससे बातें करना, बघेर से घायल होने पर सूसन द्वारा सुखराम के तन को छूना आदि बातों को भी कजरी सह नहीं सकती । सूसन मालकिन होने से भी उसे वह ऐसा करने से मना करती है । कजरी के विचार से एक नारी ही दूसरी नारी का जीवन बरबाद करती है । एवं उसका शोषण करती है । दुश्मन बन जाती है तथा उसके सुखी संसार को उजाड़ देती है । अगर नारी ऐसा न करके मिलकर रहें तो नारी का जीवन शोषित एवं उत्पीड़ित नहीं बन जाएगा बल्कि अन्यायी पुरूष वर्ग अच्छा सबक सीखा सकती है । वैसे पुरूष तो औरत के सामने झुकता है क्योंकि वह उसका जाया होता है, उसकी कमजोरी होती है । इसलिए वह औरत के दब के रहता है । लेकिन औरत औरत से नफरत करती है, उसके दर्द को समझ नहीं पाती । एक स्थान पर कजरी कहती है -- " तू क्या जाने औरत को ? जित्ती नरम दिखाती है, उत्ती पत्थर होती है । तू उसकी क्या क्या जाने ? सब कुछ छीन कर अपना कर लेना चाहती है -- सच अगर औरत औरत के खिलाफ न जाए तो वह मरद को उल्लू बना सकती है । " [8] अपने दारिद्रियपूर्ण जीवन में भी कजरी दूसरों की सहायता करना अपना कर्तव्य समझती है । शमा को घर बसाने के लिए कुछ पैसे देती है । जान की बाजी लगाकर डाकू से सूसन की इज्जत बचाती है । विचलित एवं उत्पीड़ित सूसन को नारी कर्तव्य से परिचित करके उसका जीने का हौसला बढ़ाती है । सूसन के अनौरस बच्चे की जिम्मेदारी अपने कंधों पर उठाने का उसे

वचन देती है । कजरी की धारणा है कि माँ बनना हर नारी के जीवन की सफलता एवं परिपूर्णता का द्योतक है तथा उसका अधिकार है । वह भी गर्भवती होने पर अपन सृजनशक्ति पर गर्व महसूस करती है । जीवन के किसी भी मोड़ पर कजरी लाचार एवं कमजोर नहीं होती । जीवन का हर पल कजरी सन्तोष, स्वाभिमान एवं खुशी के साथ बिताती है ।

धूपो (कब तक पुकारूँ) चमारिन अपने पति की मृत्यु के पश्चात् निःसहाय हो जाती है । उसके विचार से जीवन में अगर पति का साथ नहीं तो ऐसे जीवन को जी कर क्या करें ? वह अपना जीवन समाप्त करना चाहती है किन्तु बच्चों की खातिर उसे विवश होकर जीना पड़ता है । पतिविहीन जीवन में उसे जीने का एकमात्र सहारा उसका सतीत्व रह जाता है । और उसी के बल पर वह जीवनपथ पर हर खुशी से मुँह फेरकर चलती है । धूपो किसी के सामने हाथ सिर नहीं झुकाती एवं किसी चीज के लिए बेबस होकर किसी के सामने हाथ नहीं फैलाती । जीवन में आये दुःखों और मुश्किलों का सामना करती है । अपनी रक्षा करनेवाले करनट सुखराम को जाति-पाति के बन्धनों को तोड़कर अपना भाई बना लेती है । धूपो अपना जीवन स्वाभिमान के साथ बिताती है । लेकिन उसके शान्तिपूर्ण जीवन में एक भयानक तूफान आ जाता है । धूपो के पातिव्रत्य को चूर-चूर किया जाता है । ऐसे अपमानित जीवन के प्रति उसके मन में जबरदस्त घृणा पैदा हो जाती है । धूपो का मानना है कि नारी के जीवन में सबसे महत्वपूर्ण बात उसकी इज्जत होती है । लेकिन इज्जत ही लूट जाती है तब नारी को जीने का अधिकार नहीं रहता । अर्थात सबके सामने सिर झुकाकर जीने के बजाय मर जाना अच्छा है । धूपो बाँके और उसके साथियों से बदला लेने की प्रतिज्ञा तो करती है किन्तु स्वयं उसे पूरा नहीं कर सकती । धूपो के जीवन पर पुराने रीति रिवाज एवं परम्पराओं का प्रभाव है । धूपो पर जो संस्कार हुए हैं वे संस्कार उसे अपने आप दुष्ट अत्याचारों का न्याय माँगकर फिर से जीने की इजाजत नहीं देते । धूपो अपने मन की यातना को सह नहीं पाती । अपने जीवन की सार्थकता के लिए प्राण त्याग देती है ।

सूसन (कब तक पुकारूँ) की जीवन दृष्टि स्वच्छन्दी एवं इंग्लैंड की संस्कृति सभ्यता के अनुसार है । लेकिन अपने पिता के साथ हिन्दुस्थान में आकर यहाँ के लोगों को जानकर

पहचानकर अपने स्वच्छंदी जीवन को बदल कर जीना चाही और वह मानवतावादी दृष्टि से देखती है । यहाँ के रीति रिवाज, संस्कारों को आत्मसात कर लेती है । सूसन के विचार से हिंदुस्थान के लोग अनपढ़ गँवार है । किन्तु उनमें इन्सानियत है । उन लोगों से वह प्रभावित होती है । अतः ऐसे लोगों को कुचलकर उन पर राज करना उसे पसन्द नहीं है । इसके बारे में सूसन अपने पिता से भी बहस करती है । सुखराम द्वारा कही गयी अधूरे किले की कहानी को सुनकर उसके मन में एक अभिलाषा जाग उठती है कि अधूरे किले में छिपे खजाने को अपने देश में ले जाकर अपना जीवन उज्वल बनाना चाहती है । सूसन अपने जीवन को आधुनिकता के अनुसार गुजारना चाहती है । जीवन के बारे में सूसन के विचार है कि किसी भी हालत में मनुष्य को अपना जीवन समाप्त करने का अधिकार नहीं है । ऐसा करना मानो खुद को डरपोक एवं कमजोर साबित करता है । मनुष्य को अपने जीवन में आनेवाले दुःखों का सामना करना चाहिए । लॉरेन्स द्वारा उसके आत्मसम्मान और कौमार्य को कुचलाने पर वह विचलित होती है । आर्त वेदना से कहारने लगती है । उसे अपना अपमान असहाय हो जाता है । इस पीड़ा से सूसन छुटकारा पाना चाहती है । किन्तु कैसे छुटकारा मिले ? सूसन सोचती है — " -- आत्महत्या न मुक्ति । यह क्या है ? स्त्री है तो क्या केवल जघन्य यातना में तड़पा करे ? "[9] लेकिन आम नारियों की तरह वह चूप नहीं बैठती । उसकी इज्जत के लूटेरे लॉरेन्स को सजा देती है और उसे प्रताड़ित करके इंग्लैड भेज देती है । सूसन अपने जीवन की हर खुशी को त्यागकर दूसरों की सेवा करने में अपनी जिन्दगी बिताती है ।

चंदा (कब तक पुकारूँ) अपने जीवन को अपने ढंग से जीना चाहती है । वह जीवन में किसी भी तरह का समझौता करना नहीं चाहती । चंदा ठाकुर के बेटे नरेश से प्रेम करती है और उसके जीवन का मकसद है नरेश को पाना । सुखराम चंदा की जीवन सुरक्षा के लिए उसकी शादी दूसरे लड़के से कर देता है । किन्तु चंदा अपने जीवन पथ को नहीं बदल सकती । नरेश ही उसकी जिन्दगी है । अतः उसके लिए वह जघन्य यातनाओं को सह लेती है । चंदा जीवन में संघर्ष करती है लेकिन सफलता नहीं पाती । सुखराम उसकी हालत को बर्दाश्त नहीं करता । चंदा की वह हत्या कर देता है । चंदा अन्त तक अपने निर्णय पर अटल रहती है ।

नीलूफर (मुर्दो का टीला) मिश्री गायिका है । श्रेष्ठि मणिबन्ध उसे क्रीतदासी के रूप

खरीदता है । अनाथ होने के कारण बचपन से ही उसका जीवन पीड़ादायक रहा है । मणिबन्ध के महल की रानी बनकर कुछ मात्रा में उसकी महत्वाकांक्षा पूरी होती है । किन्तु अपने हीन दास जीवन को वह नहीं भूल सकती । जीवन का कटु सत्य, यथार्थता, वास्तविकता, को स्वीकार करने की क्षमता उसमें है । मणिबन्ध नीलूफर के आत्मसम्मान और अधिकारो को पैरों तले कुचल देता है । नीलूफर यह बर्दाश्त नहीं कर सकती । नीलूफर अपने जीवन के एकमात्र अधिकार को पाने के लिए हर तरह कोशिश करती है । लेकिन वह नाकामयाब रहती है । नीलूफर के विचार से स्वामिनी के जीवन के बजाय दासी जीवन ही अच्छा है । वह नारी हृदय की वेदना, तड़प, टीस को महसूस करती है । अपने जीवन से नीलूफर हार नहीं मानती बल्कि श्रेष्ठि मणिबन्ध के विरूद्ध विद्रोह करती है । दासता से मुक्ति तथा अपने अस्तित्व के लिए जीवन संघर्ष करती है । इन स्वार्थी मनुष्यरूपी भेड़ियों के बीच गायक विल्लिभित्तुर में नीलूफर को सच्चा प्रेम दिखाई देता है । इसलिए नीलूफर उसके प्राणों की रक्षा भी करती है । गायक भी उसके अन्दर छिपे मनुष्य हृदय, मनुष्य मन की वेदना, टीस को पहचानता है । नीलूफर गायक को मन से चाहती है । और उसके साथ मोअन - जो - दड़ो महानगर से दूर भाग जाती है तथा किसी अनजान स्थान पर निवास करती है । गायक विल्लीभित्तुर का साथ पाकर नीलूफर अपने जीवन को सफल एवं परिपूर्ण मानती है तथा उसका जीवन ही बदल जाता है । नीलूफर अपने बीते जीवन की कोई भी बात गायक से नहीं छिपाती । जीवन की ओर देखने का उसका दृष्टिकोण मानवतावादी बन जाता है । निराधार चंद्रा को वह अपने घर में आश्रय देती है । हेका और अपाप तो नीलूफर के जीवन के अहम घटक है, उन्हें दासत्व से मुक्त करना चाहती है । उनसे मिलने जाती है । अब वह किसी बात की चिन्ता या डर महसूस नहीं करती । गायक के कारण वह अपने जीवन को सुरक्षित मानती है । नीलूफर धन, वैभव, प्रसिद्धि, को तुच्छ समझती है । नीलूफर की यह धारणा है कि मनुष्य जीवन के लिए धन, अधिकार, प्रसिद्धि की लालसा हानिकारक है । जिससे मनुष्य पशु बन जाता है । वह असन्तुष्ट एवं स्वार्थी बन जाता है । " प्रसिद्धि मनुष्य की शान्ति की सबसे बड़ी शत्रु है जो उसके हृदय की कोमलता का . . . हनन करती है । उसे एक क्षण चैन से नहीं बैठने देती । " [10] अपने अपमानस्पद जीवन का मणिबन्ध से प्रतिशोध लेने की बात को भूलकर नीलूफर गायक के साथ सन्तोषपूर्ण जीवन बिताती है । नीलूफर यह नहीं चाहती कि अपने सुखपूर्ण जीवन में कोई बाधा निर्माण हो । मणिबन्ध के

अत्त्याचारों से तंग आकर नागरिक विद्रोह करते हैं । गायक भी उन विद्रोही का साथ देने के का फैसला करता है । यह बात सुनकर नीलूफर ड़र के मारे काँप उठती है । जीवन के प्रति उसका मोह बढ़ने लगता है । इसलिए वह गायक को किसी मुसीबत में नहीं डालना चाहती । इस संघर्ष से वह गायक को रोकने की कोशिश करती है । वह व्याकुल हो जाती है । उसने जीवन के जो रंगीन सपने देखे थे, उसे पूरा होने से पहले उसका टूट जाना उसके बर्दाश्त के बाहर है । इसलिए वह गायक से याचना करती है -- " मेरे जीवन में जो कुछ हो तुम हो, यदि तुम भी नहीं तो क्या होगा फिर । मैं तुम्हें नहीं जाने दूँगी कहीं । ... दो मुझे आज जीवन का स्वर्ग दान दे दो -- । " ।।

लेकिन गायक की फटकार से वह सँवर जाती है । बदले की आग उसके मन में भड़क उठती है । नीलूफर समझ पाती है कि जीवन की सफलता दूसरों के काम आने में ही है । न वह दासों को भी श्रेष्ठि मणिबन्ध के विरूद्ध भड़काती है । उनमें विद्रोह की चिनगारी फेंकती है । फिर भी इस संघर्ष में वह रक्तपात नहीं चाहती । इसलिए नीलूफर वेणी के पास उसकी सहायता माँगने जाती है। किन्तु उसकी यह कोशिश असफल रहती है । नीलूफर बड़ी क्रूरता से मारी जाती है । अन्त तक नीलूफर अपने जीवन से निराश एवं कमजोर नहीं होती । हर मुश्किलों का सामना करते हुए जीवन को आत्मविश्वास, आत्मसम्मान और निड़रता से गुजारती है ।

हेका (मुर्दो का टीला) बचपन से निराधार है । इसलिए छोटी उम्र में उसे दासी जीवन को अपनाना पड़ता है । उसे अपाप और नीलूफर का साथ मिलता है । आम दासियों की तरह उसे भी विवश होकर बाजार में बिकने के लिए खड़े होना पड़ता है । वह श्रेष्ठि मणिबन्ध की सामान्य दासी बनकर रहती है । हेका के जीवन का एकमात्र सहारा अपाप और उसका प्यार है । और उसके लिए वह घिनौने दासी जीवन को जी लेती है । हेका अपने जीवन से घृणा करती है तथा नरक समझती है क्योंकि कोई भी उस पर अपना हक जताता है, उसके साथ बेअदब से पेश आता है । किसी भी बात में उसे स्वतंत्रता नहीं है । उसे दूसरों के इशारों पर नाचना पड़ता है । जिसकी भी इच्छा हो किसी भी समय हेका को उसे खुश करना पड़ता है । हेका जीवन में घोर यातनाओं को सह लेती है । किन्तु ऐसे जीवन को वह समाप्त करना नहीं चाहती । हेका के विचार से जीवन में आये संकटो, मुसीबतों, कठिनाइयों से ड़रकर खुद को समाप्त करना कायरता है । इससे यातनाएँ कम नहीं होती । इसके बजाय इन मुसीबतों का सामना करके जीवनपथ पर आगे बढ़ना मनुष्य का कर्तव्य

है । यह बात वह नीलूफर को भी समझाती है । दूसरों की सहायता करने में ही हेका जीवन की सफलता मानती है । नीलूफर की विदीर्ण अवस्था में उसका साथ देती है । और उसे जिन्दगी से लड़ने की प्रेरणा देती है । खुद की जान खतरे में ड़ालकर नीलूफर की रक्षा करती है । हेका स्वयं हर अन्याय सह लेती है किन्तु अपाप पर कोई आफत नहीं आने देती । अक्षय प्रधान द्वारा बार-बार उसके स्वाभिमान एवं आत्मसम्मान का हनन करना तथा अपाप को घायल करना हेका की सहनशीलता के बाहर हो जाता है । दबकर रहनेवाली हेका अक्षय प्रधान को लहुलुहान कर देती है । अक्षय प्रधान की हत्या के पश्चात् हेका और अपाप अपने जीवन की स्वतंत्रता, अस्तित्व तथा मानवता के शत्रु श्रेष्ठि मणिबन्ध के खिलाफ संघर्ष करने के लिए गायक विल्लिभित्तुर का साथ देते हैं । उसे अपनी जान की जरा भी पर्वा नहीं है । हेका की जीवन के बारे में यह धारणा है कि जीवन कैसा भी हो लेकिन तभी सार्थक होता है जब अपनी मृत्यु के पश्चात् किसी की आँखो से अपने लिए सच्चे आँसू बहे । हेका दासत्व का कलंक मिटाने के लिए विद्रोह करती है तथा वीरांगिनी बनकर शहीद होती है ।

वेणी (मुर्दो का टीला) का पहले जीवन के प्रति दृष्टिकोण मानवतावादी था । वह अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाएँ रखना चाहती थी । इसलिए द्रविड़ अधिपति के आत्याचारों से बचने के लिए गायक विल्लिभित्तुर के साथ मोअन - जो - दड़ो महानगर में भाग जाती है । लेकिन मोअन - जो - दड़ो में आकर वेणी की जीवन दृष्टि बदल जाती है । भौतिक सुख की लालसा उसके मन में पनपने लगती है । ऐशो - आराम, वैभव यही जीवन है ऐसी उसकी धारणा बनती है तथा अपने दरिद्र जीवन में आये मौके को वह छोड़ती नहीं । अपने जीवन की महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए वेणी गायक का साथ छोड़कर धनवान श्रेष्ठि मणिबन्ध के साथ रहती है । भोग एवं विलासपूर्ण जीवन में वेणी इतनी रम जाती है कि जीवन की सच्चाई को पहचानने की फुरसत भी उसे नहीं मिलती । अपने में ही वह मशगुल रहती है । मानो उसकी आत्मा ही मर गई हो । सुख-सुविधापूर्ण जीवन के लिए वेणी खुद को बन्धनों में जकड़ देती है तथा दासी बनकर रहती है । किन्तु उसे इस बात का एहसास ही नहीं होता । वेणी के विचार से मनुष्य हमेशा सन्तोष से रहे तो उसका जीवन सुखदायक होगा । मनुष्य सुखपूर्ण जीवन बिताना चाहता है लेकिन वह सुख के पथ को नहीं ढूँढ़ता। अगर उसे वह पथ मिल भी जाता है तो वह उस पथ की तरफ नहीं बढ़ सकता क्योंकि यही उसकी आत्मा की कायरता है । निर्बलता है । इसलिए अवसर पाकर भी मनुष्य अपनी स्थिति को नहीं बदल

सकता । लेकिन मनुष्य की आत्मा निर्बल नहीं होती, वह अपने जीवन को हर हालत में **सुखी बनाता** है । जीवन के बारे में वेणी की मान्यता है कि व्यक्ति को बार-बार मनुष्य जन्म मिले या न मिले किन्तु वर्तमान में उसके पास जो जीवन है उसका किसी भी प्रकार का हनन नहीं करना चाहिए बल्कि भविष्य का विचार छोड़कर अपने आज को हर्ष के साथ जीना चाहिए । इसके लिए गलत रास्ते को अपनाना पड़े तो भी इसमें कोई बुराई नहीं है । वेणी भी स्वयं इस तरीके से अपना जीवन गुजारना चाहती है । नीलूफर वेणी के पास जाकर उसके अन्दर की नारी को जगाकर युद्ध रोकने की कोशिश करती है । उसके वास्तविक जीवन से उसे परिचित करके उसका जीवन बदलना चाहती है । किन्तु मदमस्त वेणी कुछ समझ नहीं सकती । नीलूफर और गायक विल्लिभित्तुर की हत्या के पश्चात् वेणी की चेतना जाग जाती है । और उसे अपने ऐय्याशी जीवन एवं विचारों पर पछतावा होता है । जीवन के प्रति वेणी का दृष्टिकोण परिवर्तित हो जाता है । वेणी सबकुछ त्यागकर तथा श्रेष्ठि मणिबन्ध एवं उसके वैभव को छोड़कर भाग जाती है ।

चंद्रा (मुर्दों का टीला) स्वाभिमानी नारी है । अपने पिताजी जनता पर जुल्म करते हैं । किन्तु चंद्रा विवशता से उनका विरोध नहीं करती । कीकटाधिपति दुश्मनों के साथ मिलकर लोगों को दास बनाता है तथा औरतों पर अत्याचार करता है । यह बात चंद्रा बर्दाश्त नहीं करती । अपने आत्मसम्मान की रक्षा के लिए अपने देशवासियों के साथ वह मोअन - जो - दड़ो महानगर में आ जाती है । लेकिन यहाँ आकर उसे कोई सहायता नहीं मिलती बल्कि उस पर अन्याय ही होता है । चंद्रा अपने जीवन से घृणा करती है । मगर अपना आत्मविश्वास खोने नहीं देती तथा जीवन से मुँह नहीं मोड़ लेती । न्याय के लिए गायक विल्लिभित्तुर के साथ रणक्षेत्र में उतर जाती है । चंद्रा अपने जीवन की हार को भी जीत मानती है । जीवन प्रति चंद्रा का दृष्टिकोण मानवतावादी है । चंद्रा के विचार से जीवन एक संघर्ष है । यह अटल है कि जीवन का अन्त होता है लेकिन जब तक जीवन है तब तक उसे सच्चाई और स्वाभिमान के साथ जीना चाहिए । अपने अधिकारों के लिए लढ़ना चाहिए । चंद्रा का यह मानना है कि जीवन में सुख के क्षण बहुत कम होते है तथा दुःख ही ही ज्यादा है । इसलिए दुःख को ही सुख मानकर चलना चाहिए तथा वेदना, पीड़ा को अपने जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाना चाहिए । चंद्रा अपने जीवन में बहुत कुछ सह लेती है । लेकिन किसी के सामने झुकती नहीं ।

SHIVAJI UNIVERSITY

वीणा (**मुर्दों का टीला**) गणसदस्या है । अमीर होने के कारण उसे जीवन में हर सुख मिलता है । वीणा अपने जीवन में धन, वैभव को ज्यादा महत्व नहीं देती । वह शादीशुदा नारी है । उसके पास सबकुछ है तथा जीवन को अहम दृष्टि से नहीं देखती । वीणा मस्त मौला नारी है, मदिरापान करना, महफिल में शरिक होना, नृत्य गायन देखना यही जीवन है, ऐसा वह मानती है । वीणा की यह धारणा है कि मनुष्य जीवन तभी सुखी हो सकता है जब मनुष्य स्वतंत्र हो । और वीणा अपने नगरवासियों के सुख एवं स्वतंत्रता के लिए अपना सबकुछ कुर्बान कर देना चाहती है ।

षोड़शी (मुर्दों का टीला) में आत्मविश्वास है । वह कर्तव्यदक्ष लड़की है । अपने उपर सौंपे गये काम को पूरा करना वह अपने जीवन का परम पवित्र कर्तव्य समझती है । परम्परा के अनुसार षोड़शी श्रेष्ठि मणिबन्ध के पास दूती बनकर जाती है । महामंत्री आमेन - रा उसके साथ छल करता है । षोड़शी उमर में छोटी है किन्तु अपने जीवन का फैसला खुद करना चाहती है । किसी की इच्छानुसार अपना जीवन बिताना नहीं चाहती । श्रेष्ठि मधिबन्ध से विवाह करने के प्रस्ताव को भी षोड़शी ठुकरा देती है । उसे कैदी बनाया जाता है । फिर भी षोड़शी अपने निर्णय पर अटल रहती है ।

2) ईश्वर सम्बन्धी विचार

जिसको हमने कभी देखा नहीं जाना नहीं तथा उसके बारे में हम कुछ भी बता नहीं सकते । अतः ऐसे अनजान के विषय में हम किसी भी निष्कर्ष पर नहीं पहुँते । ईश्वर का स्वरूप और अस्तित्व के बारे में ऐसा ही है । फिर भी मानव की वाणी, बुद्धि, ईश्वर के बारे में कुछ तो क्रियाशील रहती है । प्रकृति की सुव्यवस्था, जन्म-मृत्यु का निश्चित क्रम आदि को देखकर मानव मन में ईश्वर के बारे में यह जिज्ञासा सदैव रहती है कि समस्त दृश्य जगत् के पीछे जरूर कोई अव्यक्त सत्ता कार्य कर रही हैं । सृष्टि के क्रिया कलोपों द्वारा यह अदृश्य सत्ता प्रकट होती है । जैसे के दिन-रात, सूर्य का प्रकाश, बदलते मौसम आदि । जो मानव अस्थापरख है वह अपना विश्वास और

श्रद्धा के आधारपर ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करता है । इसके लिए उसे तर्क वितर्क की आवश्यकता नही है । हर समाज के कोई आराध्य देवता होते हैं । समाज में रहनेवाले मनुष्य के हृदय में उन देवताओं का एक अहम स्थान होता है तथा उके प्रति श्रद्धाभाव होता है । ईश्वर का अस्तित्व, सत्ता, शाप, वरदान, कृपा, पूजा-अर्चा, आदि सम्बन्धी मान्यताओं को परम्परागत रूप से मनुष्य हस्तगत करता है । मनुष्य की यह धारणा होती है कि कोई भी बात ईश्वर से नहीं छीप सकती । जो मनुष्य ईश्वर के प्रति आस्था नही रखते, एवं उसके सगुण रूप को स्वीकार नहीं करते वे भी कही न कहीं प्रकृति की अव्यक्त सत्ता को जरूर स्वीकार करते हैं । मानव जीवन का अधिकांश दुःख, पीड़ा और समस्याओं को सुलझाने में व्यतीत हो जाता है । कठोर जीवन पथ एवं दुःखो के पलों में मनुष्य ईश्वर का स्मरण करके अपनी जीवन नौका को किनारे तक लगाता है । विषम परिस्थिती से मनुष्य सँवर जाता है तो उसे लगता है यह ईश्वर की कृपा है । लेकिन मनुष्य की वेदना बढ़ती है तब मनुष्य सोचता है कि उसके कर्मो का फल ईश्वर उसे दे रहा है ।

प्यारी (कब तक पुकारूँ) कजरी महादेव, हनुमान, पीर, भैरव ईदगाह तथा अन्य देवताओं के अस्तित्व को स्वीकरती है । प्यारी के विचार से जब देवता नाराज हो जाते हैं तब मनुष्य बुरे सपने देखता है । प्यारी भी भयानक सपना देखती है तो ऐसा ही सोचती है । प्यारी की यह धारणा है कि मनुष्य अगर बेवजह किसी को दुःख पहुँचाता है या उसका शोषण करता है तो ईश्वर उसे उसके कर्मों की सजा उसे दे देता है । रूस्तमखाँ वेदना से कराह उठता है तब प्यारी को लगता है कि पराई औरत को छेड़ने के कारण रूस्तमखाँ यह दुःख भुगत रहा है । " भगवान ने भी कितनी अच्छी तरकीब निकाली है परायी औरतों से छेड़ करो तो सड़ा - सड़ा के मारता है । है । " [12] प्यारी का मानना है कि उसकी नीच जात, घिनौने जीवन तथा पीड़ादायक हालात का जिम्मेदार ईश्वर है । भयानक बीमारी, सौत कजरी का आगमन, उसके दिल पर कड़ा प्रहार कर देते हैं । प्यारी विव्हल हो उठती है और भगवान से याचना करती है -- " मुझे उठा ले । अपने पास बुला ले । दुःख दे देकर मुझे जिला जिलाकर न मार । मेरा पाप क्या है ? पराये मर्दो के संग सोई हूँ तो तूने मेरी जात ऐसी बनाई क्यों ? तभी तो आज यह बीमारी भोग रही हूँ । " [13]

कजरी (कब तक पुकारूँ) के ईश्वर सम्बन्धी विचार प्यारी के विचारों जैसे ही हैं : वह भी ईश्वर को मानती है । अपनी नीच जात होने के लिए भगवान को भी कुसूरवार मानती है। कजरी की यह धारणा है कि बुराई करनेवाले भगवान की नजर से बच नहीं सकते । उन्हें भगवान सजा दे देता है । एक स्थान पर अन्यायी रूस्तमखाँ और बाँके के बारे में वह सुखराम से कहती है -- " भगवान, यही देखेगा कि बाँके और उसके साथियों को भी देखेगा । " [14] कजरी मानती है कि दुनिया में जो कुछ होता है ईश्वर की इच्छानुसार होता है । ईश्वर की मर्जी के अनुसार किसी का कुछ नहीं चलता । ईश्वर को जो मंजूर होता है, इन्सान को भी वही स्वीकार करना पड़ता है । सुखराम अपने पूर्वज तथा अधूरे किले के बारे में सोचता है तब कजरी उसे कहती है -- " तो अब क्यों चिन्ता करता है ? जब भगवान को ही मंजूर नहीं तो तू क्यो जान देता है ? " [15]

नीलूफर (मुर्दो का टीला) मिश्री देवता ओसिरिस और आईसिस की सत्ता को स्वीकार करती है । मिश्री देवताओं पर उसकी अटूट श्रद्धा है । उन देवताओं के बारे में किसी के मुँह से बुरा नहीं सुनना चाहती क्योकि उसके विचार से जो भी उन देवताओं का अपमान करेगा तो वह उन देवताओं के अपराध का पात्र बनेगा । नीलूफर ईश्वर से ड़रती है । एक बार श्रेष्ठि मणिबन्ध ओसिरिस के बारे में अपशब्द बोलता है तब नीलूफर ओसिरिस से क्षमायाचना करते हुए कहती है -- " हम तन, मन, वचन से अपराधकारी है, दण्डनीय हैं, ओसिरिस की प्रबल शक्ति हमारे रक्षा करें । करे । " [16] ईश्वर के बारे में नीलूफर का यह विचार है कि अपने देवता के केवल दर्शन मात्र से इन्सान के सारे दुःख-दर्द दूर हो जाते हैं । मणिबन्ध द्वारा वेणी को अपनाने के पश्चात् वह तिलमिला उठती है । नीलूफर प्रार्थना करती है -- " हे परमदेवता , ओसिरिस तू एक बार सुपने में तो मुझे वह दिखा दे जिसे अपने जीवन में तो कभी न देख सकूँगी । " [17] नीलूफर अपने परम देवता ओसिरिस और आईसिस की शक्ति एवं महिमा के आगे दूसरे देवताओं को तुच्छ समझती है । और अपने आराध्य देवता के सिवा किसी के सम्मुख अपना सिर नहीं झुकाती । एक स्थान पर वह कहती है -- " किन्तु नीलूफर ने ओसिरिस के अतिरिक्त किसी के भी सम्मुख शिश नहीं झुकाया । " [18] नीलूफर के मन में फराऊन के प्रति भी श्रद्धाभाव है । नीलूफर उसे मानव में

सर्वश्रेष्ठ तथा असाधारण मानती है । नीलूफर की दृष्टि से फराऊन जिसे देखता है वह उसी का हो जाता है । यह सब सृष्टि उसकी है । फराऊन ईश्वर की साक्षा छाया है ।

हेका (मुर्दो का टीला) भी ओसिरिस की सत्ता को मानती है । उसके विचारसे ओसिरिस मानवप्राणी को जीवन देता है । जीने के लिए कुछ साधन देता है । इसके पश्चात् जीवनचक्र से मुक्ति देता है । लेकिन उसकी इच्छा में पहले इन्सान को प्राण त्याग देने का कोई हक नहीं है । ऐसे अपराध के लिए ईश्वर कभी क्षमा नहीं करता । नीलूफर जब आत्महत्या के बारे में सोचती है तब हेका उसे समझाती है -- " क्या आत्महत्या से तेरी व्यथा समाप्त हो जायेगी ? - कहते हैं जो आत्महत्या करके मरता है उसे ओसिरिस भी क्षमा नहीं करते । " [19]

वेणी (मुर्दो का टीला) अहिरराज अश्वत्य को मानती है । कीकट देश में वह इन्हीं देवताओं से अपने प्रेम को अखण्ड रखने के लिए प्रार्थना करती है । मोअन - जो - दड़ो में आकर वह महादेव, महामाई आदि के प्रति भी श्रद्धाभाव रखती है । वेणी का मानना है कि विषमास्थिति में देवता ही हमारा हौसला एवं आत्मविश्वास बढ़ाता है । वेणी गायक की हत्या करने सिंधु तट पर जाती है किन्तु वह असफल रहती है । लापता होने पर वह महामाई का स्मरण करती है । पुनश्च श्रेष्टि मधिबन्ध की भेंट हो जाने पर उसे लगता है कि ऐसे कठिन समय में महामाई की कृपा के कारण ही यह पुनश्च मिलन सम्पन्न हो गया है ।

3) भाग्य के बारे में विचार

डॉ. नृंगेय राघव के आलोच्य उपन्यासों की नारियाँ अवश्य भाग्यवादी है किन्तु वे अत्याधिक भाग्यवादी नहीं हैं । उनके मन में भाग्य के प्रति आस्था है किन्तु किसी विशिष्ट परिस्थिति में ही भाग्य-विधाता का स्मरण करती है । ' कब तक पुकारूँ ' की नारियाँ अपनी नीच जाति और हीन वर्तमान स्थिति का कारण भाग्य एवं पूर्वजन्म के फल को मानती है। कजरी एक स्थान पर कहती है -- " हे भगवान । जात में नीच बनाया है कुछ नहीं माना । मेरे करम का फल था । " [20] पचपन साल की बूढ़ी चामरिन कहती है -- " नीच जात है । बस । सो तो

भगवान ने बनवाया है । करमफल से जनम मिलता है । -- [21] ' मुर्दो का टीला ' की नीलूफर, हेका अपना अपना भाग्य समझकर ही दासी जीवन जीती है । कजरी और प्यारी (कब तक पुकारूँ) सुखराम को पति के रूप में पाना अपना भाग्य समझती है । दोनों संवाद करती है -- " भाग की बात ही है जो तू आ गई । तू तो भाग से उपर है ? " [22] प्यारी का सुखराम और कजरी का साथ आधे पथ पर छोड़कर हमेशा के लिए चले जाना कजरी के लिए दुर्भाग्य की बात है । नीलूफर (मुर्दो का टीला) का दासी से स्वामिनी बनना तथा हेका दासी ही बना रहना अपना भाग्य समझती है । बचपन में उन दोनों के बारे में ज्योतिषी ने भविष्यदाणी की थी -- " तू स्वामिनी होगी और हेका, तू एक पशु की स्त्री होगी । [23] अन्त में यह भविष्य सच होता है ।

आलोच्य उपन्यासों की नारियों की यह धारणा है कि केवल भाग्य पर आश्रित रहनेवाला व्यक्ति निष्क्रिय रहता है । अतः उसे अपना कर्म करते रहना चाहिए । वह नारियाँ अपने कर्म का इच्छित फल न पाने पर दोष ईश्वर को दे देती हैं तथा भाग्य के कुचक्र पर उत्तेजित होकर अपने भाग्य से लड़ना श्रेयस्कर समझती है । प्यारी (कब तक पुकारूँ) नटनी जीवन को त्यागकर रूस्तमखाँ से नाता जोड़कर साहस के बल पर अपना दरिद्र जीवन बदल लेती है । कजरी सुखराम को अपना भाग्य बदलती है । चंदा आम नटनी की तरह सारा जीवन बिताना नहीं चाहती बल्कि नट से शादी करके भी पति से दूर रहती है । धूपो चमारिन इज्जत लूटने के बाद सती हो जाना पूर्व जन्म का दण्ड समझती है । सूसन पूर्वजन्म पर विश्वास करके खुद को अधूरे किले की मालकिन ठाकुरानी समझती है । सूसन कुँवारी रहकर समाज की अवहेलना से बच जाती है । नीलूफर (मुर्दो का टीला) शूद्र दासी है किन्तु रूप और यौवन के बल पर स्वामिनी बन जाती है । फिर भी उसका शोषण होता रहता है । किन्तु गायक को अपनाकर वह अपना भाग्य बदल देती है तथा उसकी स्वामिनी बन जाती है । हेका घृणित दासी जीवन से संघर्ष करती है । चंद्रा दुर्भाग्य से दर-दर की ठोकरे खाती है । अतः प्यारी, कजरी, सूसन, चंदा, धूपो, नीलूफर, हेका, चंद्रा, आदि नारियाँ भाग्य से विद्राहे करती है ।

4) कर्म - कर्म की स्थिति

निष्क्रियता मृतक का प्रतीक है । इसलिए व्यक्ति अपने जीवन में कुछ करता रहता है । बिना काम किये उसकी जिन्दगी चल नहीं सकती । व्यक्ति परम्परागत रूप से अपना काम करती रहता है । चाहे वह काम घृणित या अनैतिक क्यों न हो । व्यक्ति न चाहकर भी ऐसे काम करता रहता है । और अपनी उपजीविका के लिए काम करना व्यक्ति के लिए अनिवार्य है । कभी - कभी कर्म आसक्त भाव से किया जाता है जिसमें स्वार्थ रहता है तो कभी अनासक्त भाव से कर्म किया जाता है जिसमे स्वार्थ के बजाय परमार्थ रहता है ।

किसी भी राष्ट्र या समाज में परिवार के पालन - पोषण के दायित्व के लिए स्त्री और पुरूष दोनों को समान महत्व है । इतिहास की शृंखला में अति प्राचीन तथा आदिम काल को छोड़कर प्रायः सभी राष्ट्रों में पितृसत्ताक पद्धति अस्तित्व में रही है । पुरूष प्रधान समाज में पुरूष घर के बाहर के कार्यों को सुचारूता रूप से करता है तथा उन्नति का कर्तव्य निभाता है, तो स्त्री परिवार एवं बच्चों की देखभाल, सेवा, सुश्रुषा, स्नेह एवं घर के विभिन्न कष्टसाध्य दायित्व का वहन करती हैं । वैसे देखा जाय तो स्त्री को अर्थार्जन का अधिकार नहीं है । उसे घर के अन्दर ही काम करना पड़ता है । अब आधुनिक काल में ऐसा नहीं है । स्त्री भी पुरूषों की तरह अर्थार्जन के लिए घर के बाहर जाकर पुरूषों के समान काम करती है ।

आलोच्य उपन्यासों की नारियाँ आर्थिक प्राप्ती के लिए परिवार के दायित्व का निर्वाह करते हुए अन्य काम भी करती हैं । इनके विचार से उपजीविका के लिए एवं पैसे कमाने के लिए नारी को कोई भी काम करते हुए लज्जा महसूस नहीं करनी चाहिए । अपने नारी धर्म का कर्तव्य निभाना चाहिए । ये नारियाँ अनपढ़, गँवार हैं । अतः उनकी यह धारणा है कि निम्न जाति की औरतों का काम अपने परिवार, पति की सेवा करना है । जरूरत पड़े तो अन्य पुरूषों की इच्छा पूर्ति करके धन कमाना चाहिए । अगर ये औरतें ऐसा नहीं करेंगी तो मानो उसका जीवन ही समाप्त हो गया । इन औरतों के पास यौन और सौन्दर्य है । इसे ही निःसंकोचता से बेचती है । उनके

अनुसार शरीर बेचना उनका काम ही है । सौनो (कब तक पुकारूँ) अपनी बेटी प्यारी को समझाते हुए कहती है -- " औरत का काम औरत का काम है । उसमें बुरा-भला क्या ? " [24] प्यारी समझ जाती है कि उसे अपना काम करना चाहिए । वह सुखराम की नाराजगी दूर कहते हुए कहती है -- " औरत को तो औरत का ही काम करना पड़ता है । औरत के काम में औरत को सरम नहीं होती । " [25] नीलूफर और हेका (मुर्दों का टीला) दासी नारियाँ हैं । उन्हें बचपन से ही अपना शरीर बेचना और दूसरों की सेवा करने का पाठ पढ़ाया जाता है । ये नारियाँ अपना काम बिना हिचकिचाहट से करती हैं । उनका मानना है कि उन्हें जन्म ही ऐसे काम करने के लिए मिला है । हेका किसी भी समय किसी भी पुरूष की कामपूर्ति करती है तथा अपने मालिक श्रेष्ठि द्वारा बताया गया काम तुरन्त कर देती है । नीलूफर गायक विल्लिभित्तुर से कहती है -- " ... फिर लाज क्यों ? जो बाल्यकाल से सिखाया गया है वही तो किया है मैंने ... केवल एक मास पिण्ड हूँ । संसार में आज तक इसी का मोल दिया है आज भी इसी का मूल्य मिलेगा । " [26] राजकुमारी चंद्रा भी हालातवश दासी बन जाती है तथा जिन्दा रहने के लिए वेश्या व्यवसाय करके ही अपना पेट भरती है । वेणी भी नृत्यगान करके अपना निर्वाह करती है । ये नारियाँ अनिच्छा से क्यों न हो अपना काम करती रहती हैं । पतिव्रता धर्म, लज्जा, शील, शरीर की पवित्रता, कुलीनता, इनके लिए इन नारियों के जीवन में कोई स्थान नहीं हैं ।

5) समाज के बारे में विचार

मनुष्य समाजप्रिय प्राणी है । समाज से दूर होकर वह अकेला रह नहीं सकता । आदिम काल से मनुष्य समूह करके रहता आया है । इस समूह का बदलता रूप ही समाज है । समाज में रहकर ही मनुष्य समुचित उन्नति एवं विकास करता है । समाज के द्वारा ही मनुष्य के अस्तित्व की पहचान बनी रहती है तथा उसे मान-प्रतिष्ठा भी मिलती है । अगर समाज ही न हो तो व्यक्ति का व्यक्तित्व स्वयं में अर्थहीन हो जाएगा । व्यक्ति के लिए समाज और सामाजिक व्यवस्था अनिवार्य है ।

डॉ. रांगेय राघवजी के आलोच्य उपन्यास ' कब तक पुकारूँ ' में अछूत करनट समाज जीवन का चित्रण है तथा ' मुर्दो का टीला ' में शोषित दास जीवन का चित्रण है । ये दोनों भी समाज सभ्य समाज से बहिष्कृत हैं । इन समाजों की नारियाँ तो उच्च वर्ग से उत्पीड़ित हैं । ये नारियाँ समाज में रहकर समाज के घात-प्रतिघात को स्वयं झेल लेती हैं । वे अपनी पीड़ा दर्द को सहती हैं किन्तु चूप नहीं बैठती बल्कि समाज से बदला लेना चाहती हैं । सभ्य समाज के पुरूष इन नारियों को निर्जीव खिलौना तथा काम पूर्ति का साधन समझते हैं । जब चाहे वे उनके शरीर से खेलते हैं, ऊब जाने पर ठुकरा देते हैं । ये नारियाँ ऐसे शोषक समाज से प्रतिशोध लेना चाहती हैं क्योंकि कुलीन या खानदानी नारियों को समाज से जो सम्मान, आदर, संरक्षण मिलता है ये सब आलोच्य उपन्यास की नारियों को नहीं मिलता । समाज हमेशा उन्हें हीन समझकर उनकी प्रताड़ना करता हे । ये नारियाँ समाज के तिरस्कृत एवं घृषित पक्ष को उद्घाटित करती है तथा समाज में स्वयं को लेकर क्रान्ति उत्पन्न करना चाहती हैं । ' कब तक पुकारूँ ' की सौनो खुद घिनौने समाज में जीती हैं किन्तु अपनी बेटी को इस समाज से दूर रखना चाहती हे । इसलिए वह ठाकुर वंश से संबंधित सुखराम से विवाह करने के पक्ष में हैं ताकि वह समाज में खानदानी नारी की तरह अपना जीवन व्यतीत कर सके । अतः वह अपने पति इसीला से विवाद करती है -- " तुम नहीं चाहते तुम्हारी बेटी इज्तत से रहे ? ... दुनिया में हमारी कोई इज्जत नहीं ... मैं ने सुखराम को पाला है कि वह मेरी बेटी को दुनिया के जुलम से बचा सके । " [27] सौनो के ये विचार खोखले हैं । प्यारी और सुखराम की शादी हो जाती है लेकिन वह समाज के दृष्टिकोण को नहीं बदल सकती । पति और दामाद की सुरक्षा के लिए सौनो अपनी बेटी प्यारी को अपने ही पथ पर चलने के लिए विवश कर देती है । सौनो के विचार से उसके समाज की हर औरत को यह सब करना ही पड़ता है । इस से मुँह नहीं मोड़ा जा सकता । केवल उसके चाहने से समाज के रीति-रीवाजों को बदला नहीं जा सकता । बड़े अफसोस से सौनो प्यारी से कहती है -- " तू अभी नादान है पागल ! दुनिया है । इस में सब ऐसे ही होती है । " [28]

प्यारी (कब तक पुकारूँ) के विचार से जब तक औरत जवान है तब तक समाज उसे चाहता है किन्तु जवानी खतम होने पर समाज में उसे कोई स्थान नहीं है । प्यारी कितनों

के संगे रातें बिताती है परन्तु अपने पति सुखराम को दूसरी गृहस्थी बसाने की इजाजत नहीं देती ! प्यारी नटनी का व्यवसाय करते हुए रूस्तमखाँ की रखेल बनती है और अपने साथ सुखराम को भी रखना चाहती है । किन्तु पति के रूप में नहीं क्योंकि वह जानती है समाज में दो मर्द एक औरत के साथ एक जगह पर नहीं रह सकते । प्यारी समाज के अत्याचारों को सहते हुए चूप नहीं बैठती । इज्जतदार एवं ऊँचे समाज के खाखलेपन का पर्दा पाश कर देते हैं । प्यारी के विचार से ऊँचे समाज के मर्द नीच औरतों को अपने जाल में फँसाकर हर्षोल्लास मनाते हैं । इन औरतों को बूरी जानलेवी बीमारी का तोहफा देते हैं । कई गैर कानूनी काम करते हैं । और समाज में खुले आम खुद इज्जतदार ऊँचे खानदान के बनकर घूमते रहते हैं । समाज भी ऐसे लोगों की ही इज्जत करता है। किन्तु ये लोग अपनी रखैल को अपने समाज में नहीं ले जा सकते ताकि वे ड़रते हैं । इन लोगों से अच्छे तो नीच करनट हैं जो कुछ करते हैं समाज से छिपाते तो नहीं । दरोगा रूस्तमखाँ को अपनी रखैल प्यारी की सौत कजरी का उसके घर आकर प्यारी के साथ ज्यादा देर तक बातें करना पसन्द नहीं आता । वह प्यारी को कजरी के जाने के बारे में पूछता है लेकिन प्यारी निड़रता से कहती है कि कजरी उसकी सौत है । उसकी मर्जी से जाएगी । इस बात को लेकर दोनों में झगड़ा हो जाता है । रूस्तमखाँ प्यारी को गालियाँ देता है । प्यारी के मन में रूस्तमखाँ के प्रति जो तिरस्कार है उसे उगलावा देती है । -- " ... अगर सरम है तो अपनी बिरादरी में ले जाएगा मुझे ? वह तो तू मरद है तेरे पाप पाप नहीं, मेरे पाप पाप है ? सरम है तो घर बसा के नहीं रहता दुनिया में यो छिनाला करता ? ... मैं कमीन अनपढ़ नीचों मे नीच, जात की नीच, बिरादरी के मेरे नेम नीच पेट की भूखी, नंगी । तुझमें क्या कसर थी जो ऐसा किया ? जुआ, पकड़े तेरा कानून तू उसमें घूंस खा के मुटाए, फिर मुझे सरम की दुहाई दे रहा है बेसरम ! ... जगत् जानता है उतरी -- फुतरी हूँ, पर तू तौ अभी भला बन डोलता है । " [29] सुखराम से बिछुडकर तथा बीमारी के कारण प्यारी नितान्त अकेली हो जाती है । वह दुनियादारी के बारे में सोचती है कि दुनियाँ में अकेले व्यक्ति का कोई स्थान नहीं है । संसार में सब कुछ होता रहता है किंन्तु जब तक कोई साथ नहीं देता तब तक मानो दुनिया की जानकारी ही हासिल नहीं की जाती । अकेले व्यक्ति पर दुनिया विश्वास नहीं कर सकती । रूस्तमखाँ प्यारी के लिए भगवान से दुवा माँगता है लेकिन प्यारी जानती है कि समाज में रूस्तमखाँ जैसे लोग विषम परिस्थिति के कारण दीन-हीन और कमजोर बन जाते हैं । उनके मन में

उत्पन्न इन्सानियत एक दिखावा है । परिस्थिति बदल जानेपर वे अपनी असलियत पर उतर आते हैं । प्यारी ने इस दुनिया के बहुत से लोगों को जाना है, दुनिया की बुराई की उसे अनुभूति है । वह जानती है कि यह समाज बड़ा जालिम है । जिसमें हम विश्वास करना चाहते हैं पर लोग उसमें विश्वास नही करने देते । किसी को किसी की कदर नही है । प्यारी अपनी सौत कजरी को भी इसके बारे में कहती है -- " दुनिया बड़ी खराब है कजरी । इसमें भरोसा कर लो तो लोग भरोसा नही करने दे । " [30] प्यारी समाज की विषमता के खिलाफ विद्रोह करती है । किन्तु उसके समाज के रीति - रीवाजों का पालन भी करती है । प्यारी के मन में यह सवाल रहता है कि यह समाज ही बुरे कार्य करने को विवश कर देता है । फिर वही समाज ही बुरे कार्य करनेवालों को बदचलन कहता है । ऐसा क्यों ? रूस्तमखाँ के घर बैठ जाने का कारण न जानते हुए समाज प्यारी को ही दोषी मानता हे । बाँके और रूस्तमखाँ को वह समाज में रहनेवाले हिंस्त्र जानवर तथा जहरीले नाग समझती है जो उसे दूध पिलाते उसे ही वे डस लेते हैं । और प्यारी इन जहरीले नागों को कुचल देती है ताकि फिर किसी को डस न सके । प्यारी समाज की घृणा को बर्दाश्त करती हैं किन्तु उस समाज के अन्यायी लोगों से प्रतिशोध लेती हैं ।

कजरी (कब तक पुकारूँ) अपने पती कुर्री के साथ सुखी नहीं रहती क्योंकि उसे अपना तन बेचकर दोनों का पेट पालना पड़ता था । बचपन की आदतों के मुताबिक कजरी ऐसे काम करती भी है । किन्तु ऐसे कामों से वह घृणा करती है । समाज के शोषण से वह ऊब जाती है । लेकिन कजरी यह भी जानती है कि इस समाज में उसे जिन्दा रहना है तो ऐसे घृणित काम उसे करने ही पड़ेंगे । कजरी चाहती है कि इस समाज का कोई पुरूष उसे अपनाकर दैहिक शोषण से हमेशा - हमेशा के लिए छुटकारा दिलवाये । समाज में वह किसी एक को अपना सबकुछ समर्पित करके इज्जतदार जिंदगी बिताना चाहती है । सुखराम को योग्य पुरूष समझकर कजरी उसकी हो जाती है । सुखराम उसे समाज की विषमता के बारे में बताता है कि तू तन क्यों बेचती है इसका पता है तुझे ? कजरी अपने मन की बात सुखराम को कहती है -- " न बेचू तो जियूँ कैसे ? बचप्न में ही आदत पड़ गयी है तब मजा भी आता था सो बह गयी पर अब उसमें मन नहीं भरता । मैं चाहती हूँ कोई मुझे अपनी कहें । " [31] सुखराम कजरी के मन की चाह पूरी कर देता है ।

लेकिन सुखराम की घायल स्थिति में उन्हें उपजीविका का प्रश्न सताता है । कजरी जानती है कि भूख, प्यास, और यौन तृष्णा को मिटाने के लिए मनुष्य कुछ भी करता है । समाज तो इन भूखों को मिटाने के लिए ही हैं । मनुष्य इन को छोड़कर समाज से अलग नहीं हो सकता । कजरी आम नटनियों की तरह काम करने की इजाजत सुखराम से माँगती है । उसे पती है कि जिस समाज में उसका जन्म हुआ है उस समाज की नारी कितनी भी अच्छी क्यों न रहे किन्तु समाज उसे कभी इज्जत नहीं देता । परन्तु सुखराम उसे ऐसा करने से मना कर देता है । तब कजरी कहती है -- " मेरी कौन-सी इज्जत है जो दुनिया मुझे मानती ही क्या है ? मैं वसे पापन हूँ मेरे बलमा । तेरी भलमनसाहत ही है की तू मुझे भी इज्जत देता है । " [32] कजरी समाज में देखती है कि ऊँची जाति के लोग नीच जाति के लोगों को हीन समझकर उन्हें छूते नहीं तथा उनके हाथों का बना हुआ खाना नहीं खातें । उनका धर्म उन्हें ऐसा करने की इजाजत नहीं देता । किन्तु नीच औरतों को अपनी काम पूर्ति का साधन बनाना अपना हक समझते हैं । कजरी इसे सामाजिक विडम्बना मानती है । समाज की ऐसी प्रवृत्ति पर कजरी कड़ा व्यंग्य कसती है । रूस्तमखाँ का दोस्त चक्खन स्वयं को ऊँची जाति का और इज्जतदार समझता है । नीचों के घेर जाना उनके यहाँ खाना-पीना उसके मन को स्वीकार नहीं हैं । लेकिन प्यारी के कहने पर वह दवा लाने सुखराम के घर जाता हैं । वहाँ उसकी भेंट कजरी से होती है । कजरी उसे देखकर ही पहचानती है कि चक्खन किस किसम का आदमी है । कजरी उसे आड़े हाथ लेना चाहती है । उसे अपने द्वार पर बिठाकर इन्तजार करवाती है । चक्खन मन-ही-मन डर जाता है । वह सोचता है कि गाँववालों को इस बात का पता चलेगा तो क्या होगा ? लोग ताने मारेंगे । चक्खन बहुतही कमजोर आदमी है । कजरी की मीठी बातें सुनकर उसके बुने हुए जाल में फँस जाता है । कजरी उसे कहती है लेकिन वह इन्कार कर देता है । उसके मन की हलचल कजरी पहचानती है । वह कहती है -- " मेरे संग तो लाला-बनिया बामन ठाकुर सब खाँ चुके हैं । " [33] चक्खन के मन को सांत्वना मिल जाती है । फिर भी वह हिचकिचाता है । किन्तु कजरी जब कुछ समय अकेले में उसका साथ देना चाहती है तो चक्खन झट से तैयार हो जाता है । कजरी को रहा नहीं जाता वह फटकारती है नीच औरत के साथ एकान्त में रहने से धर्म नहीं बिगड़ता ? अब उसका समाज चक्खन को पापी नहीं मानेगा ? किन्तु चक्खन निर्लज्जता से जबाब देता है -- धरम तो कमर के उपर होता है । "[34]

चक्खन को लगता है कि कजरी पराजित हो गयी । परन्तु कजरी भी उसके कथन पर करारा चोट करते हुए कहती है -- " तेरी बहन-बेटी ने ही तुझे यह धरम सिखाया होगा ? " [35] कजरी के प्रहार से उसकी अन्तरात्मा तक को झकझोर डाला गया । चक्खन अत्यन्त शरमाया, गया, लज्जित हो गया । कजरी मन-ही-मन उल्हासित हो उठती है । कजरी करनट समाज के पुरूषो को भी धिक्कारती है । उसके विचार से नट बदमाश और निक्कमे होते है । उनकी औरतों को कोई भी घिनौने काम करके परिवार का गुजारा करना पड़ता है । समाज में नीच औरतों की उमर ढल जाने पर उसका जोश समाप्त होता है तब उसे कोई नहीं पूछता । " हमारे नटों में मर्द हरामी होते हैं तभी तो नटनियों को अच्छा-बुरा करके पेट पालना पड़ता है । दुनिया ही ऐसी है । यहाँ औरत बूढ़ी हुई फिर कौन पूछता है ? " [36] कजरी चाहती है कि समाज में नारी को उसके अधिकार मिलने चाहिए । समाज की असहाय एवं शोषित नारी को देखकर कजरी विद्रोह करने लगती है । प्यारी का शोषण, धूपो की मौत आदि का प्रतिशोध वह शोषण दरिंदो को मारकर लेती है ।

इतनाही नहीं बलात्कारित सूसन को लेकर समाज के बन्धनों को तोड़ देती है । कजरी नारी को समाज से बढ़कर मानती है । उसके विचार से नारी कैसी भी हो लेकिन माँ बनकर समाज में अच्छी बन जाती है । कुँवारी माता सूसन को वह घृणित दृष्टि से नहीं देखती बल्कि उसकी सृजनशीलता की कदर करती है । कजरी मानती है कि दुनिया में अकेली नारी को समाज जीने नहीं देता इसलिए नारी को किसी का सहारा लेकर ही जीना चाहिए । अगर नारी ऐसा नहीं करती तो यह जालिम दुनिया उसे मिटा देती है ।

धूपो (कब तक पुकारूँ) नीच चमार जाति की है लेकिन पति की मृत्यु के पश्चात् वह अकेली अपने बच्चो के साथ रहती है । उसके विचार से अगन दुनिया में लोग एक दूसरे से मिलकर रहेंगे तो उन्हें समाज का किसी भी बात का डर नही है । किन्तु धूपो की यह धारणा गलत है । वह दुनियावालों के साथ अच्छा बर्ताव करती है पर समाज के कुछ लोग उसकी अच्छाई एवं अकेलेपन का लाभ उठाते हैं । चमार समाज में भेदा-भेद मानते हैं । लेकिन धूपो उसका विरोध करती है । अपनी रक्षा करनेवाले नीच करनट सुखराम को वह अपना भाई मानती है । धूपो समाज की मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं करती । किन्तु वह समाज से दबकर भी नहीं रहती । उसके साथ

बलात्कार हो जाने पर स्वयं को अपवित्र समझती है । लेकिन इस बात के लिए खुद को दोषी नहीं मानती । समाज धूपो को ही दोषी ठहराता है । मगर वह समाज से डरती नहीं । सच्चाई एवं समाज का दृष्टिकोण बदलने के लिए धूपो अपनी जान गवाँ देती है ।

चंदा (कब तक पुकारूँ) करनट समाज में पली है । लेकिन उसके विचार आम नटनियों की तरह नहीं हैं । चंदा नटनी है, अपनी हैसियत जानती है तथा समाज के नियमों को भी मानती है । तभी तो वह नरेश से प्रेम करते हुए भी उसकी पत्नी बनने के बजाय उसकी दासी बनना चाहती है । समाज की परम्पराएँ रीति - रीवाज जिसके मूल में शोषण और जुल्म है, चंदा उनके खिलाफ है । इसे चंदा बदलना चाहती है । नीलू की पत्नी होते हुए भी चंदा उसे छोड़कर अपने प्रेमी नरेश को खुले आम मिलती रहती है । चंदा समाज से प्रेम का हक माँगती है । किन्तु समाज उसे यह हक नहीं देता । चंदा देखती है कि युगों से नीच, दीन-हीन समाज का शोषण हो रहा है । उन पर जुल्म किये जा रहे हैं । किन्त उसे विश्वास है कि समाज की यह स्थिति बदल जाएगी । चंदा समाज में आम औरत की तरह नहीं जीती बल्कि समाज की मान्यताओं को धिक्कारती है ।

सूसन (कब तक पुकारूँ) की विचारधारा आधुनिक है अतः वह समाज को भी इस दृष्टि से देखती है । वह युराणीय समाज तथा भारतीय समाज में तुलना करती है । सूसन जानती हे उसके समाज में हर तरह की सुख-सुविधाएँ हैं लेकिन मन की शान्ति नहीं है । इसके विपरीत भारतीय लोगों का जीवन अभावों से पूर्ण है फिर भी वे असली सुख को उपभोगते हैं । भारतीय समाज के जातीय भेद-भावना, आपस के झगड़े, जुल्मी परम्पराएँ सूसन को मान्य नहीं है । बलात्कार के परिणामस्वरूप हुई बच्ची को वह अपना नहीं सकती क्योंकि सूसन जानती है कि समाज में उसके पिता की इज्जत, प्रतिष्ठा है । और इसी झूठी मान-प्रतिष्ठा की खातिर सूसन अपनी ममता का गला घोट देती है ।

नीलूफर और हेका (मुर्दो का टीला) हेका के विचार से मिश्र में धनिक (श्रेष्ठि) और दास यही दो समाज हैं । यह कुलीन समाज दास समाज को हीन तथा पशु समझकर उस पर अमानुष जुल्म करता है । उसका शोषण किया जाता है । दासों को अपनी स्थायी सम्पत्ति मानकर

उन्हें नंगे बदन बाजारों में पशु की भाँति उनका क्रय-विक्रय करते हैं । दास मनुष्य होकर भी उनके साथ मनुष्य का-सा बर्ताव नहीं करते । श्रेष्ठि धनिक दासों का मालिक होता है । उनके सामने दास सिर झुकाकर बोलते हैं । उनके हुकूम के अनुसार दासों को काम करना पड़ता है । दासों को किसी भी प्रकार का अधिकार नहीं होता, न ही समाज में कोई इज्जत मिलती । समाज हर वक्त उन्हें ठुकराता हैं । दासों पारिवारीक एवं वैवाहिक जीवन जीने का अधिकार भी नहीं है । बचपन में ही दासों को खरीदा जाता है । दास अगर ठीक से काम नहीं करते या कोई गलती करते हैं तब उन्हें पीट लिया जात है । ये मालिक दासी नारियों से अपनी हविश बुझाते हैं । श्रेष्ठियों के महल में कितनी सारी युवा दासियाँ होती हैं । श्रेष्ठि को जो दासी [illegible] अच्छी लगे उसी से वह अपना मनोरंजन करता है । हेका और नीलूफर ने दासी जीवन की यातनाओं को सहा है । दासी के सौन्दर्य एवं शरीर को देखकर समाज उसकी कीमत तय करता है । नीलूफर गायक विल्लिभित्तुर से दासियों के स्थिति के बारे में बताती है -- " जब कभी मुझे किसी ने पसन्द किया है तब तक मुझे उसके सामने इसी रूप को लेकर अपना पथ बनाना पड़ा है । अन्यथा क्या है मुझमें ? न धन, न कुल, न बंधु न अधिकार । केवल एक मास पिण्ड हूँ । संसार में आज तक इसी का मोल दिया है आज इसी का मूल्य मिलेगा । -- यह नीलूफर मणिबन्ध की प्रिया नहीं वही हार बाजारों में बिकने वाली एक दासी है । " [37] नीलूफर के विचार से जिस देश में दास प्रथा मौजूद है उस देश के समाज में मनुष्य नहीं रहते बल्कि हिंस्त्र पशु रहते हैं । वे न दूसरों के बारे में सोचते हैं न ही उनमें कुछ संवेदना होती है । " मोअन - जो - दड़ो में सुसभ्य पशु रहते हैं मनुष्य नहीं रहते हैं । वे अपनी बात कहना जानते हैं । दूसरों की वेदना समझने की बुद्धि उनके देवताओं ने नहीं दी क्योंकि उससे उनका लाभ नहीं होता । " [38] नीलूफर, हेका, चंद्रा भी ऐसे ही समाज में रहती हैं जिसमें निर्बल असहाय नारी को अपने शरीर पर भी अधिकार नहीं हैं । पेट के लिए अपनी इज्जत दाँव पर लगानी पड़ती है । चंद्रा राजकुमारी होकर भी समाज विषमता के कारण उसे वेश्या होना पड़ता है । नीलूफर इस विषमता को स्पष्ट करती है -- " क्या है संसार ! राजकुमारी को भी अपना शरीर दो दानों के लिए बेचना पड़ता है । " [39] हेका अपने दास समाज के रिवाजों का उल्लंघन करके अपाप को अपनाती है । लेकिन समाज के लोग उसका शोषण करते हैं । हेका के

विचार से अपाप का साथ पाने जुल्म में समाज उसे इस तरह दण्डीत कर रहा है ।

वेणी (मुर्दो का टीला) को निर्बल समझकर कीकटाधिपति उसे अपनाने के लिए उस पर जुल्म करता है । वेणी भी ऐसे समाज से घृणा करके भाग आती है । नीलूफर वेणी को उसके देशवासियों की रक्षा के बारे में कहती है किन्तु वेणी के विचार से जब वह समाज की मर्यादाओं का सम्मान करके रहती थी तभी उसी समाज के लोग अत्याचारियों का साथ दे रहे थे । किसी ने भी उसका पक्ष नहीं लिया, न ही उसकी वेदना को समझा । अतः ऐसे लोगों एवं समाज से वेणो प्रतिशोध लेना चाहती है । तथा उनका बचाव नहीं करना चाहती । इसलिए वह नीलूफर की बात को ठुकराती है । वेणी के मन में सामाजिक विषमता के बारे में घृणित भाव हैं । वेणी अपने समाज को धिक्कारती है -- " उस दिन सब भूल गये थे जब द्रविड़ का अधिपति मुझ से बलात्कार करना चाहता था और द्रविड़ के पुजारी उस बलात्कार को धर्म से न्याय करने के लिए तत्पर बैठे थे । उस दिन कोई नहीं था ? माता-पिता, भाई-भगिनी, कीकटनगरवासी, किसी में इतना साहस न था कि वे अत्याचारियों का गला घोट सके ? " [40]

चंद्रा (मुर्दो का टीला) की यह धारणा है कि जो समाज की मर्यादाओं का सम्मान करते हैं समाज उसका ही शोषण करता है । जो व्यक्ति समाज के अन्यायों का विरोध करता है । समाज उसका नामोनिशान मिटा देता है । लेकिन चंद्रा को विश्वास है कि एक न एक दिन समाज का यह दृष्टिकोण परिवर्तित होगा । वह गायक से कहती है -- " यह संसार कलुषित है, यहाँ विद्रोह भी एक भूल है । " [41]

।) राजनीति

प्यारी, कजरी (कब तक पुकारूँ) अशिक्षित नारियाँ हैं । अतः वे राजनीति के बारे में ज्यादा नहीं जानती । किन्तु इतना जानती है कि जो गद्दी पर बैठता है वही राजा है और उसका ही हुकूम चलता है । ये बड़े लोग , पुलिस गरीबों का शोषण करते हैं। इन बड़े लोगों की हुकूमत

से अपने समाज को आजाद करने के लिए प्यारी इन लोगों के साथ संघर्ष करती है । सूसन अंग्रेज गवर्नर की बेटी है जो हिन्दुस्थान पर राज करने तथा यहाँ के लोगों को गुलाम बनाने आयी हैं । हिन्दुस्थान के प्रति सूसन के मन में हमदर्दी है किन्तु उसके पिता उसे परामर्श करते है । सूसन समझती है कि हिंदुस्थानी अनपढ़ है, उन्हे अक्ल और तलवार के बल पर दबाया जाता है । वे स्वामिभक्त हैं । लेकिन उन्हें कभी यह महसूस नहीं होन देना चाहिए कि वे भी मनुष्य हैं । नही तो वे क्रान्ति कर सकते हैं । वे गुलाम हैं तथा उसके साथ गुलाम का-सा बर्ताव करना चाहिए। महात्मा गांधी तथा अन्य क्रान्तिकारी लोग जनता को जागृत करते हैं । हिंदुस्थानी जनता स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रियता से उतर जाती है । सूसन का पिता अंग्रेज अफसर घबरा जाता है क्योंकि काँग्रेस रियासतों में सिर उठा रहा है । इस कारण वह **एजेन्ट** -- द **गवर्नर** बनने में असमर्थ हो हो रहा है । सूसन के मन में देशभक्ति है । वह नहीं चाहती कि पिता का सिर नीचे झुक जाय। सूसन के विचार से अगर काँग्रेस को ही खतम किया जायेगा तो कुछ मुश्किल नहीं आ जायेगी । वैसे ये लोग कुछ जानते नहीं । सूसन अपने पिता से कहती है -- " काँग्रेस मंत्रिमंडल भंग क्यो नहीं कर देते ? सब ठीक हो जायेगा । यह जाहिल लोग जानते ही क्या हैं ? हिटलर ने क्या किया ? किया ? " [42] सूसन अंग्रेज शासन के योग्य बनने की कोशिश करती है । बलात्कार हो जाने पर सूसन को लगता है कि उसने अंग्रेजों की मर्यादाओं का उल्लंघन किया इसलिए वह हिंदुस्थान को छोड़कर चली जाती है ।

नीलूफर, हेका, चंद्रा (मुर्दो का टीला) सामन्तवादी शासन प्रणाली के खिलाफ विद्रोह करती है । नीलूफर एक स्थान पर कहती है -- " मधिबन्ध को मैं अपना दास बनाकर रखूँगी जैसे भयानक चीते को महासम्राज्ञी पैरों के पास बिठाके रखती थी और तुझे मैं गुलामी से सदा के लिए छूडा दूँगी । " [43] कीकटपर बर्बर आर्य आक्रमण करते हैं । कीकटाधिपति देशनिष्ठा को छोड़कर उन्हें शरण आकर दासत्व का स्वीकार करता है । किन्तु राजकुमारी चंद्रा का देशाभिान और आत्मसम्मान दासत्व को स्वीकार नहीं करने देता । चंद्रा अपने पिता से नफरत करने लगती है । तथा अपने देशवासियों के साथ मोअन - जो - दड़ो मे आकर वहाँ के नागरिकों को अपने देश की जनता की रक्षा करने की याचना करती है -- " महानागरिकों, कीकट का आत्मसम्मान अपने भाई

के सामने हाथ खोले खड़ा है । लाओ मेरी झोली में शस्त्र डालो और मुझे वचन दो कि तुम बदला लोगे । क्योंकि ये सब मेरी और तुम्हारी भी प्रजा है । .. आज मैने फिर इनकी ओर से संसार के सर्वश्रेष्ठ महानागरिकों की सभा में आकर प्रार्थना का दुस्साहस किया है । ... हम हार गये हैं किन्तु हमारा सत्य नहीं हारा है -- । [44] चंद्रा के कथन पर कोई भी ध्यान नहीं देता बल्कि चंद्रा को भी गुलाम बनवाया जाता है । इसलिए चंद्र स्वतंत्रता संग्राम में गायक विल्लिभित्तुर का साथ देती है । वीणा के मन में देशभक्ति तथा अपने गणतंत्रात्मक शासन प्रणाली के प्रति सम्मान की भावना है । गणपति के निर्वाचन के लिए गणसदस्यों की सभा बुलवायी जाती है उसमें आमेन - रा और मणिबन्ध शामिल होते हैं ताकि वे दोनों भी गणतंत्रात्मक शासन प्रणाली के खिलाफ हैं । मणिबन्ध स्वयं महासम्राट बनना चाहता है तथा जनता को गुलाम बनाना चाहता है । गणसभा भंग हो जाती है। मणिबन्ध के सैनिक सभा मंच को घेर लेते हैं लेकिन गणसभा के पवित्र मंच का अपनाम वीणा सह नहीं सकती । वह हाथ में कटार लेकर चिल्लाती है -- " महानागरिकों ! आज आपकी यह नगरवासिनी उनकी हत्या करेगी जो गण का अपमान करेंगे । " [45] गणसदस्य मणिबन्ध से संधि करने के बारे में सोचते हैं लेकिन वीणा को यह विचार पसन्द नहीं आता । वह इसका विरोध करती है । वीणा की यह धारणा है कि " धन कमाया है, लुटा देंगे । किन्तु स्वतंत्रता ! वह कमाकर रक्षित की जाती है । -- सुख वह है जब स्वतंत्रता हो चाहे उसके लिए कितनी भी कठिनताएँ क्यों न उठाई जाए । " [46] षोड़शी उम्र में छोटी है किन्तु गणसदस्य की बेटी होने के कारण राजनीति के बारे में उसे जानकारी है । " जब पराजय की आशंका हो । स्त्री को दूती बनाकर आशा की जाती है कि शत्रु उस पर शस्त्र नहीं उठायेगा । " [47] षोड़शी संधि पत्र लेकर मणिबन्ध के पास जाती है किन्तु महामंत्री आमेन - रा उसके साथ दूत जैसा व्यवहार नहीं करता । षोड़शी को यह बात खटकती है । वह निड़रता से कहती है -- " देव हम बंदी हैं या दूत ? " [48] राजनिती में ' शान्ति दूत ' का आदर किया जाता है किन्तु आमेन - रा महामंत्री होकर भी समझ नहीं पाता । षोड़शी आमेन - रा की राजनीति को धिक्कारती है ।

2) साम्यवाद / मार्क्सवाद

विभिन्न राजनैतिक वादों में ' मार्क्सवाद ' एक ऐसा वाद है जिसका प्रभाव समस्त संसार

पर पड़ा है । साम्यवाद, समाजवाद आदि नामों से पहचाना जाता है । ' मार्क्सवाद ' शब्द का कई अर्थों में इस्तेमाल किया जाता है । लेकिन वास्तव में उसका असली अर्थ, कार्ल मार्क्स का क्रान्तिकारी सिद्धान्त तथा उस विचारधारा से सम्बन्धित है । समीक्षकों का मार्क्सवाद की ओर देखने की दृष्टिकोण अलग-अलग रहा है । व्यवहार मे मार्क्सवाद को समाज परिवर्तन के साधन रूप में लानेवाले लेनिन ने मार्क्सवाद के बारे में कहा है कि -- "यह थ्योरी आधुनिक समाज में विरोध और शोषण के तमाम रूपों को सीधे-सीधे जाहिर करना शुरू करती है । वह पता लगाती है कि उनका विकास कैसे - कैसे हुआ है वह बताती है कि वे क्षणभंगुर क्यों है दूसरे रूपों में उनका बदलना लाजमी क्यों है और इस तरह वह सर्वहारा वर्ग की मदद करती है कि वह जितनी जल्दी और जितनी आसानी से हो सके सभी तरह के शोषण को खत्म कर दे । " 49 लेनिन की इस विचारधारा से शोषण तथा उसके स्वरूप को समाप्त करने की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती है । लेनिन की दृष्टि से मार्क्सवाद सिद्धान्त महत्वपूर्ण है क्यों कि यह सिद्धान्त सर्वहारा वर्ग की सहायता करनेवाला तथा उनकी ओर सहानुभूति की दृष्टि से देखनेवाला है । डॉ. शिवकुमार मिश्र के मार्क्सवाद के बारे में यह विचार है -- ' मार्क्सवाद मूलतः संसार तथा समाज को समझने और उन्हें बलदने का पथ निर्देश करनेवाला एक क्रान्तिकारी विचार दर्शन है । वह संसार को बदलने का पथ नहीं सुझाता उस प्रक्रिया को तेज करता है, उस में आगे बढ़कर हिस्सा लेता है जिसे एक नये संसार के उद्‌भव का माध्यम है । " 50 अतः समाज परिवर्तन तथा समाज को जानने के लिए मार्क्सवादी दर्शन सहायता करता है । मार्क्सवाद का प्रमुख लक्ष्य पूँजीवाद को उखाड़ना, साम्यवाद की स्थापना करना है ।

आलोच्च उपन्यासों की नारियों पर मार्क्सवाद दर्शन का गहरा प्रभाव रहा है । **प्यारी ((कब तक पुकारूँ)** कई बातें है जो प्यारी को अपने पति सुखराम को छोड़कर रूस्तमखाँ की रखैल बनने के लिए प्रेरित करती है । प्यारी बचपन से देखती आयी है तथा उसने महसूस किया है कि करनट जाति की बड़ी निर्ममता से शोषण हो रहा है । उन पर जुल्म, अत्याचार किये जाते हैं । नट पेट के लिए चोरी करते हैं । उन्हे पशु की तरह पीटा जाता है । कभी - कभी बेवजह गिरप-तार किया जाता है । उन्हे छुड़ाने के लिए नटनियों को पुलिस का साथ निभाना पड़ता है । समाज के उच्चवर्णीय नटनियों और कुत्तियों में फर्क नहीं करते । सुखराम जो ठाकुरों के खानदानों में

से हैं वह ठाकुरों के सभी सुखों से वंचित हैं । समाज की विषमता देखकर प्यारी के मन में प्रतिशोध की आग भड़क जाती है । प्यारी सोचती है कि हम पर ये जुल्म होते हैं क्योंकि हम गरीब हैं, हमारे पास कोई अधिकार नहीं हैं । इसी भूखी - प्यासी गरीबी के कारण ही प्यारी के मन में धन तथा हुकूमत पाने की हविश जाग जाती है । अपने शरीर का सौदा करके प्यारी सुखराम के जीवन में सुख - सुविधाएँ लाना चाहती हैं तथा करनट टोली को भी निड़र बनाना चाहती है । रूस्तमखाँ की प्रस्ताव स्वीकार करने में प्यारी को रूस्तमखाँ का ड़र उतना नहीं, वास्तव में उसके मन में रूस्तमखाँ का वैभव, हुकूमत, मान-प्रतिष्ठा, आराम के साधन आदि का मोह भी है । प्यारी रूस्तमखाँ के माध्यम से अपने दुश्मनों को का बदला लेना चाहती है । सुखराम ठाकुर होने के सिर्फ सपने देखता है । लेकिन प्यारी को ये सपने निराधार लगते हैं । वह कहती है -- " अगर तुम महलों में नहीं ले जा सकते तो अपने को बेचकर तुझे हुकूमत दूँगी । फिर तुझे पुलिसवाले ड़रा न सकेंगे । " [51] प्यारी सुखराम के सपने वास्तव में लाना चाहती है । रूस्तमखाँ से हुकूमत पाकर जुल्मी लोगों को सबक सिखाना चाहती है । " तब मैं एक दो ठाकुरों को पिटाऊँगी जिन्होंने मुझसे मजलब निकालकर दुअन्नी की जगह इकन्नी दी थी । निरोती बामन के घर आग लगा दूँगी चुपचाप। हरामजादा । मुझे छिनाल कहना था । सो भी अपना काम साधकर पूरी गुड़ की भेली देने को कहकर मुकर गया था । हुकूमत करूँगी मैं सबका सिर कुचलूँगी । " एक बार रूस्तमखाँ के घर पहुँच जाऊँ तो पेसकार को भी मुट्ठी में धर लूँगी । " [52] अन्त में वह रूस्तमखाँ के को भी छोड़ती नहीं । प्यारी का यह संघर्ष शोषण एवं पूँजीवादियों के खिलाफ है । प्यारी जो कुछ करती है केवल स्वयं के लिए नहीं बल्कि समस्त करनट जाति की सुरक्षा के लिए ।

कजरी (कब तक पुकारूँ) जानती है कि इस संसार में हर आदमी किसी-न-किसी पर जुल्म करता है, शोषण करता है । इनमें से कोई आदमी धनसंचय करके दूसरों पर अधिकार जताने के लिए शोषण करता है । कजरी ऐसे लोगों से नफरत करती है । कजरी के विचार से मनुष्य के मन में अधिक से अधिक वैभव पाने की लालसा पैदा होती है । उसे लगता है उसे पूरी तरह स्वतंत्रता ऐशो आराम है किन्तु यह स्वतंत्रता न होकर मनुष्य के लिए बन्धन है । झोपड़ी में सुख, शान्ति है, वह महलों में नहीं है । कजरी प्यारी की ओर इसी दृष्टि से देखती है । प्यारी की सहनशीलता, देखकर शोषण के जड़ो को उखड़ देना चाहती है । इसलिए वह शोषण के खिलाफ संघर्ष में

प्यारी का साथ देती है । कजरी की यह धारणा हे कि इस संसार में मनुष्य प्राणी एक हैं, उसमें भेदा-भेद नहीं है । इस धरती पर सबका हक है । फिर भी लोग एक-दूसरे के दुश्मन क्यों बन जाते हैं ? कजरी सूसन से कहती है -- " सरकार मुलक तो सबका होता हे । मानुस तो धरती पर जहाँ रहे । " [53]

नीलूफर (मुर्दो का टीला) ने दर्दनाक दासी जीवन को उपभोगा है । विवस्त्र होकर वह बाजारों में बिक चुकी हैं । दो वक्त की रोटी के लिए उसे अपना शरीर किसी पुरूष को देना पड़ता है । नीलूफर को स्वयं याद नहीं कि वह कितने पुरूषों के संग रह चुकी है । ऐसे जीवन से वह छुटकारा पाना चाहती है । इसलिए नीलूफर के मन में धन, वैभव, अधिकार, मान-तलब हासिल करने की हविस पैदा होती है । श्रेष्ठि मणिबन्ध का मन जीतकर नीलूफर दासी से श्रेष्ठि मणिबन्ध की रानी बन जाती है । उसके मन की महत्वाकांक्षा पूरी हो जाती है । लेकिन चंद दिनों में उसका स्वामिनी पद एवं और अधिकारों को वेणी छीन लेती है । अधिकारों को छीन कर ले जाने के पश्चात् नीलूफर तड़प उठती है । इन्ही अधिकारों से उसने अपने शारीरिक शोषण को रूकवाया था । फिर से वह दासी जीवन जीना नहीं चाहती । इसलिए अधिकारों को पाने के लिए नीलूफर विद्रोह करती है । नीलूफर को लगता है कि वेणी का प्रेमी गायक विल्लिभित्तुर का ही यह षड़यंत्र है । वह गायक से कहती है -- " तुम ने मेरे उपवन में आग लगाई है तुम मुझे बरबाद करने आये हो । तुम मेरे जीवन को भस्म देने आये हो बर्बर ! तुम्हारे भविष्य के सुखस्वप्नों में अपने छोटे जीवन के एकमात्र अधिकार को मैं नहीं खो देना चाहती । मैंने सब कुछ दाँव पर लगाकर जो जीता है तुम उसे ही लूट लेना चाहते हो । " [54] नीलूफर के विचार से दुनिया में लोग अपने सुख के लिए दूसरों के अधिकार सुख चैन लूटने के लिए जरी भी हिचकिचाते नहीं, वे केवल अपना स्वार्थ देखते हैं । दूसरों की परवाह उन्हें नहीं होती । वेणी के बेवफाई के बारे में नीलूफर गायक से कहती है -- " स्त्री भी पुरूष की भाँति धन की लोलुप होती है । उसका मस्तिष्क भी अधिकारों की अबाध तृष्णा के लिए लालाथित रहता है । क्या हैं उसमें जो तुम समझते हो वह वह विचलित नहीं होती और क्या है तुझमें तो कोई स्त्री इतना वैभव छोड़कर तुम्हारे दरिद्र चरणों पर अपना सर्वस्व अर्पण करेगा ? " [55] पूँजीवादी अधिकार सत्ता के अभिलाषि लोग मनुष्य

नही होते सिर्फ गरीबों का शोषण करते हैं, उनका खून चूसते हैं । गरीब लोग पूँजीवादी लोगों के आत्याचारों से ड़रकर उनके गुलाम बन जाते हैं तथा उनका सम्मान करते हैं । किन्तु वे धनिक लोग उन गुलामों के बारे में जरा-भी नही सोचते । नीलूफर जानती है कि -- ... स्वामी के इंगित पर मरनेवाला दास मनुष्य नही कुत्ता होता है क्योंकि स्वामी और दास का एक ही स्वार्थ कभी-कभी नही हो सकता । " [56] मनुष्य को दास बनानेवाले साम्राज्यवादी लोगों से नीलूफर घृणा करती है । वह वासना से सदा-सदा के लिए मुक्ति चाहती है । इसलिए नीलूफर विद्रोह करती है । उसके विद्रोही रूप को देखकर हेका काँप जाती है । नीलूफर के इरादे अपरिवर्तनिय हैं " ... नीलूफर ने स्वयं अपना पथ **खोजकर** पग उठाया था और आज भी यदि पथ पर रोक आ खड़ी होगी तो वह उसे ठोकर नहीं मारेगी वरन बुद्धि से दूर करेगी । वह मूर्खा नहीं कि अपने पाँव को स्वयं ही क्षत-विक्षत कर ले । " [57] नीलूफर को स्वामिनी बनकर भी उसे अपमानित जीवन जीना पड़ता है । लेकिन सत्ता, अधिकारों के कारण वह अपमान को भी सह लेती है । गायक विल्लिभित्तुर को अपनाकर उसका सुख, चैन छिननेवाली वेणी से नीलूफर प्रतिशोध लेना चाहती है । लेकिन गायक उसे स्वीकार नही करता फिर भी नीलूफर मायुस नहीं होती, अपनी कोशिशे जारी रखती है । उसमें आत्मविश्वास है ... " ... मैं अपने अपमान का बदला लूँगी । मैं अपने को मिट्टी में नही मिलने दूँगी । ... नीलूफर सब कुछ सह सकती है किन्तु वह फिर से राह का कुत्ता नहीं होना चाहती । " [58] नीलूफर गायक के विचारों से प्रभावित होती है ताकि गायक नारी को बन्धनों में जकड़ना नहीं चाहता तथा दासप्रथा का विरोध करता है । आखिर नीलूफर उसे अपना लेती है । स्वतंत्रता के लिए नीलूफर श्रेष्ठि मणिबन्ध का महल एवं वैभव को छोड़कर विल्लिभित्तुर के साथ झोपड़ी में रहती है । नीलूफर की यह धारणा है कि समाज में तो विषमता, अमानुषता, स्वार्थी वृत्ति शोषणवृत्ति है इसके मूल में सत्ता सम्पत्ति हैं । इसकी लालसा तथा उन्हें हासिल करने के लिए मनुष्य नीच से नीच कर्म करता है तथा मनुष्य धर्म को भूलता है और हिंसा एवं शोषण का मार्ग अपनाता है । अगर मनुष्य अतिरिक्त धन, सत्ता की अभिलाषा छोड़ दे तो संसार में उत्पात, युद्ध, आत्याचार नही होंगे । नीलूफर राजकुमारी चंद्रा से कहती है -- " न स्त्री बुरी है न पुरूष । धन बुरी वस्तु है । अधिकार बुरी वस्तु है । धन और अधिकार को ठीक दो फिर संसार में कुछ भी बुरा नहीं है ... । " [59] नीलूफर केवल अपनी तथा हेका की दासत्व से मुक्ति करना नहीं

चाहती है । इसलिए नीलूफर दासों में विद्रोह फैलाती है तथा उनके मन में चेतना जगाते हुए कहती है -- " अपने इस दासत्व को छोड़ दो । तुम जहाँ तक हो शरीर के दास बनो न कि मन के भी । यदि तुम्हारी बुद्धि भी दासत्व में फँसी रहेगी तो कभी भी तुम्हारी मुक्ति नहीं होगी । "[60] नीलूफर को लगता है कि कुछ दिन स्वामिनी बनकर उसने पाप किया है किन्तु वह अपना खून देकर उस पाप का प्रायश्चित भुगताना स्वीकार करती है । वह दासों को एहसास दिलाती है कि वे पशु नहीं मनुष्य हैं और उन्हें मनुष्य का-सा बर्ताव इज्जत एवं अधिकार मिलना चाहिए -- " ...

शताब्दियों के आत्याचारों ने तुम्हारी बुद्धि को पंगु बना दिया है । तुम सब सोचने में असमर्थ हो गये हो । मैं कुछ नहीं चाहती । बस भूलो मत कि तुम मनुष्य हो और यदि तुम्हारे स्वामी बननेवाले को सुख भोगने का अधिकार है तो तुम्हें भी है ... । [61] नीलूफर समानता के तत्व का स्वीकार करने के पक्ष में हैं ।

हेका (मुर्दा का टीला) अपाप के लिए आत्याचारो एवं शोषण को सहती है । लेकिन नीलूफर के विद्रोही विचारों का उस पर गहरा प्रभाव पड़ जाता है । हेका महसूस करती है कि वह भी मनुष्य है, स्वतंत्र है, उसे भी इज्जत से जीने का अधिकार है । स्वतंत्रता का संघर्ष हेका अक्षय प्रधान से करती है । अक्षय प्रधान के प्रणय निवेदन का इन्कार करते हुए उसे गालियाँ देती है । इतनी ही नहीं पूरी शक्ति लगाकर उसे लहुलुहान कर देती है । स्वतंत्र संग्राम में सबसे पहले तथा सब से आगे रहती है । पीड़ित दासों के सुख के लिए हेका अपने व्यक्तिगत सुख और स्वार्थ को त्याग देती है ।

वेणी (मुर्दा का टीला) मोअन - जो - दड़ो में नृत्य करके अपना निर्वाह करती है । श्रेष्ठि मणिबन्ध उसके नृत्य से खुश होकर उसे कुछ चीजें उपहार स्वरूप देता है । वेणी के मन में भौतिक सुख सुविधाएँ एवं वैभव को पाने की महत्वाकांक्षा निर्माण होती है । गायक विल्लिभित्तर की गरीबी, उसकी कोमलता वेणी को अखरने लगती है । उसके मन की यौन अतृप्ति, धन की तृष्णा बढ़ने लगती है । श्रेष्ठि मणिबन्ध के बहकावे में आकर वेणी अपने प्रेमी को त्यागकर

तथा मर्यादाओं का उल्लंघन करके स्वामिनी बन जाती है । विलासपूर्ण जीवन उसे बहुत भाता है । वेणी के विचार से इस संसार में धन ही सब कुछ है, सत्ता, सम्पत्ति में ही असली सुख है । अगर मनुष्य को अपनी स्थिति बदलने का अवसर मिले तो उसे छोड़ना नहीं चाहिए । अपने सुख के लिए दूसरों को हानि पहुँचाना तथा उसे कुचल देना गलत नहीं है, नहीं उसमें स्वार्थ है । वेणी वर्तमान में जीना चाहती है । हर कोई कामयाब एवं शक्तिशाली व्यक्ति दूसरों का शोषण करके ही बड़ा बन जाता है । वैभव और स्वार्थ में वेणी इतनी डूब जाती है कि गायक की हत्या करने का षड़यंत्र रचाती है । धन की नशा में मदमत्त होकर इन्सानियत भूल जाती है । मणिबन्ध तथा उसकी सत्ता को पाकर वह गर्व का अनुभव करती है । वेणी के मन में महासम्राज्ञी बनने की आशा पनपने लगती हैं । इसलिए वह मणिबन्ध के आत्याचारों का साथ देती है । अन्त में वेणी महसूस करती है कि धन से मनुष्य अंधा और स्वार्थी बन जाता है । वेणी को अपने किय कराये पर पछतावा होता है । वह विलासपूर्ण जीवन एवं पूँजीवादी मणिबन्ध को त्याग देती है ।

वीणा और चंद्रा भी साम्राज्यवादी मणिबन्ध के खिलाफ संघर्ष करती है । दास प्रथा एवं शोषण का विरोध करती है । वे चाहती है कि इस संसार में सभी मनुष्य समान हो तथा उन्हें जिने का अधिकार मिल जाए ।

3) प्रेम

परिवार का आधार प्रेम है तथा समाज का आधार परिवार है । व्यक्ति एक दूसरे के स्नहे के कारण ही जीवन की कठोरता एवं मानसिक तनाओं से मुक्ति पाकर अपना जीवन सुकर तथा सुलभ बनात है । जैसे जीवन का व्याख्या करना मुश्किल है वैसे ही प्रेम की व्याख्या करना भी कठीण काम है । प्रेम के अर्थ में बहुत गहराई है । प्रेम मानसिक एवं आत्मिक भावना है । वस्तुतः प्रेम को समझा जा सकता है किन्तु उसे समझाना कठीण है । संसार में विभिन्न तरह का प्रेम होता है जैसे -- भाई-बहन, माँ-बाप-संतान, प्रेमी-प्रेमिका आदि । सभी रिश्तों के साथ स्नेह का धागा जुड़ा रहता है । इन रिश्तों में स्त्री-पुरूष प्रेम महत्वपूर्ण है क्योंकि इनके प्रेम आकर्षण से ही

सृष्टि का सृजन एवं विकास हुआ है । स्त्री-पुरूष का एक-दूसरे के प्रति जो आकर्षण है वह प्राकृतिक है । अतः " प्रकृति का सामंजस्य ही प्रेम का आकर्षण है । " [62] प्रेम वह है जो हमारे व्यक्तित्व की क्षमताओं का सम्मान कर सके तथा स्नेह का आधार दे सके । स्नेह मिश्रित आधार द्वारा प्रेरणा मिलती है । सुसंस्कृत व्यक्तित्ववाले प्रेमियों का प्रेम उच्च कोटी का होता है । वह प्रेम आध्यात्मिक धरातल पर ऊँचा उठ सकता है । सच्चे प्यार में त्याग की भावना रहती है । प्रेमियों की हमेशा यह कामना रहती है कि अपने प्रिय के जीवन के हर मोड़पर अपने प्रिय का साथ निभाएँ तथा भौतिक और अध्यात्मिक दोनों स्तरों पर उसका साथीदार बन जाए । प्रेम एक ऐसी शक्ति है जिससे मनुष्य को विक्षिजाता तथा व्याकुलताओं से बचाती है और उसे स्वस्थ रख सकती है । प्रेम सार्वभौम है । उसमें जीवन के सर्वांग को प्रभावित करने की क्षमता रहती है । प्रेम का कोई भी रूप हो पर वह जीवन गति को तीव्र कर देता है । " पुरूष का प्रेम उसके जीवन का एक अंग है । स्त्री का प्रेम उसका सर्वस्व है । " [63] नारी जिस पुरूष से सच्चे मन से प्रेम करती है उसी ऊँचाई पर ले जाती है । प्रेम हमारे सर्जनतात्मक जीवन की आवश्यकता है ।

प्यारी (कब तक पुकारूँ) के विचार से - " प्रीत तो मन की होती है । " [64] वह शरीर और मन को अलग-अलग मानती है । सुखराम प्यारी का बचपन का दोस्त है , वह उससे मन से प्रेम करती है । फिर भी वह औरों को अपना शरीर देती है । कभी कभी प्यारी सुखराम को शरीर सुख देने से इन्कार करती है वह इसलिए प्यारी जानती है कि सुखराम उसका प्रेमी है और वही उसके पीड़ा , दर्द, थकान को समझ सकता है । वैसे अन्य पुरूष नहीं समझेंगे । यौवन के बल पर वह सब को नचाती है । पुलिस के द्वारा सुखराम की पीटाई होती है तो प्यारी उसके लिए अपने शरीर का सौदा करती है । वह खुद को सुखराम की रक्षक ही मानती है । और उस पर हुकूमत करती है -- " मेरा मन तेरा है । जिस दिन तुझ से हट जाएगा मैं तुझे छोड़कर चली जाऊँगी । " [65] प्यारी के इस कथन में बरसों से पुरूष की दासी बनी भारतीय नारी के मन का विलक्षण और तीखा विद्रोह है । प्यारी स्वयं प्यार के बन्धनों से मुक्त रहकर सुखराम को इन्हीं बन्धनों में जकड़ देती है । रूस्तमखाँ के घर जाने से पहले प्यारी सुखराम से वचन लेती है कि वह किसी दूसरी औरत को न चाहें । अर्थात वह किसी भी हालत में सुखराम को खोना नहीं चाहती ।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

यही प्यारी के प्यार की ऊँचाई है । प्यारी के अनुसार -- " नाता जोड़ना और बात है मन की होके रहना और बात है । " [66] प्यारी तन और मन के बँटवारे को जीवन का एक महत्वपूर्ण तत्व मानती हे । यही विभाजन कभी-कभी समर्पित होता है लेकिन उसके दर्दनाक जीवन के बीज इसमें ही निहित रहते हैं । कजरी का सच्चा प्यार एवं रूस्तमखाँ की असलियत को जानकर प्यारी के मन में सुखराम के प्रति प्यार में समर्पण, ऊँचाई, एकनिष्ठता का भाव पैदा होता हे । सुखराम को खतरनाक बीमारी से बचाने के लिए उन से दूर रहती है और कहती है -- " मैं तुझ से नहीं अपने आप से घीन करती हूँ । मैं तुझे नहीं तेरी इस सुन्दर देही को भी प्यार करती हूँ । मेरा तो सब सत्यानाश हो जायेगा पर मैं तुझें बिगड़ते नहीं देख सकती । " [67] अपने प्रेमी को सच्चे दिल से चाहनेवाली औरत (कजरी) को सौत के रूप में स्वीकार कर के उसे भी बहन जैसा प्रेम करती तथा कजरी को सुखराम के योग्य मानकर उसके **बड़प्पन** की प्रशंसा करती है । प्यार की गहराई, उदात्तता पाने के लिए प्यारी को बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है जैसे -- रूस्तमखाँ द्वारा फूल जैसे शरीर को यौन बीमारी मिल जाना उसके नीच स्वभाव का ज्ञान, पशु सदृश्य रूस्तमखाँ का घोर शारीरिक स्तर पर घिनौना सहवास, सुखराम को खो देना आदि बातों से उसका मन विरह पीड़ा की आग में तप जाता है । इसी कारण ही उसका प्यार कजरी और सुखराम के साथ प्रौढ़ता सामंजस्यता और संतुलन प्रस्थापित कर देता है ।

कजरी (कब तक पुकारूँ) के मन में अपने पति कुर्री के बोदेपण के कारण शारीरिक भूक की अतृप्तता है । किसी सुन्दर जवान के प्रति उसके मन में आकर्षण था । वह साफ कहती है -- " सफेदी भी करे तो अच्छे मकान पर । क्या टूटे खण्डहर को सजाना । " [68] कजरी का सुखराम के प्रति आकर्षण मन की अतृप्तता ही है । मानसिक धरातल पर नहीं । सुखराम के सान्निध्य में आने पर कजरी उसके व्यक्तित्व से प्रभावित होती है । अब वह मर्दों को फँसाकर पैसे कमाने में रस नहीं लेती ऐसे बातों से वह ऊब जाती है । वस्तुतः कजरी के मन में एकनिष्ठता तथा समर्पण का भाव पैदा होता है । इस कारण ही वह किसी पराये पुरूषों के समर्पण से बच जाती है। कजरी की सुखराम के प्रति शारीरिक आसक्ति आत्मिक ऊँचाईयों तक विकसित होती है । ऐसे कई घटनाएँ है जिस के कारण कजरी अपने तन मन से सुखराम की ही हो जाती है तथा दोनों का प्रेम

निरन्तर परिष्कृत होता रहता है जैसे दोनों का अधूरे किले में जाकर खतरों से गुजरकर वापस लौटना, धूपो की रक्षा के लिए बाँके से बैर मोल लेना और उस में अपनी शक्ति का परिचय देते हुए घायल होना, घायल सुखराम की कजरी द्वारा सेवा करना, चमारिनों से सुखराम के साहस की तारीफ सुनकर कजरी का पुलकित होना, प्यारी और कजरी का सुखराम की सुरक्षा के समान उद्देश्य से घनिष्ठता निर्माण होना आदि । अपनी सौत प्यारी की मौत से कजरी को गहरी पीड़ा होती है । कजरी के प्रेम के बारे में यह धारणा है कि हम जिससे तन मन से चाहते हैं उस प्रिय की हर स्थिति एवं हालत मे हमें खुश रहना चाहिए । उस प्रिय का साथ, सहवास और प्यार मिल जाए तो समझो हम ने सब कुछ पा लिया । कजरी भी सुखराम के साथ संतुष्ट रहती है चाहे तो कजरी भी अपना शरीर बेचकर और अधिक भौतिक सुख पा सकती थी किन्तु वह ऐसा नहीं करती । कजरी का असली सुख तो सुखराम है । और सुखराम के साथ में उसे किसी बात का अभाव नहीं है । एक स्थान पर वह कहती है -- " मेरे पास सब कुछ है, जो कुछ है सो दूँगी नहीं, नये के लिए हाथ नहीं पसारती । " [69] कजरी अपने प्यार से सुखराम को क्रियाशील, साहसी तथा उदार बनाती है । कजरी का प्यार शारीरिक वासना से उपर उठकर उदात्तता के शिखर तक पहुँचता है ।

चंदा (कब तक पुकारूँ) और नरेश का एक-दूसरे के प्रति का आकर्षण युवावस्था तथा तरूणाई का सहज प्राकृतिक एवं अनिवार्य प्रेम है । चंदा और नरेश में जातीय अंतर है । ठकुराई का दंभ अभेद्य दीवार बनकर खड़ा है । जिसकी खिड़कीयों के बीच से झाँकना भी इन दोनो के लिए मना है । " यह सत्य है कि हमारा प्रेम हमारी समस्त कोमल भावनाएँ सब पर समाज के भीषण अंकुश हैं । हमने ही अपनी स्वतंत्रता को मिटाया है ताकि हम अपनी स्वतंत्रता को भोग सके । यहीं समाज का नियम है जिसको तोड़ने का अधिकार नहीं मिलता और उसके आधार इतने गहरे हैं कि उन्हें तोड़ना ही हमें पाप बनकर डराया करता है । " [70] जहाँ अब भी ठाकुरों की हुकूमत चलती है वहाँ ठाकुर और नटनी का प्रेम कैसे सम्भव हो सकता है । लेकिन चंदा प्रेम को समाज की विषमता एवं बन्धनों से स्वतंत्र मानती है । चंदा का मानना है कि प्रेम तो मन में उत्पन्न होता है तथा वह सहज मानवीय भावना है । दुनिया की कोई ताकद प्रेम को मन से हटा नहीं सकती तथा प्रेम में जुल्म आत्याचारो को सहने की अजीब शक्ति होती है । चंदा की प्रेम सम्बन्धो की धारणा है कि यौन सम्बन्धों की अभिव्यक्ति पारस्पारिक मिलन तथा संतान आदि । इससे

ज्यादा चंदा कुछ नही चाहती । उससे सहज रमणीय प्रेम में कही वर्ग भावना, सत्ता, अधिकार की लालसा दिखाई नहीं देती । नरेश के प्रेम के खातिर चंदा ठाकुर और ठाकुरानी के जुल्मों को बर्दाश्त करती है । विवाह के पश्चात् भी नरेश से मिलती रहती है । किन्तु नरेश अपने संस्कारों के कारण उसे अपनाने में असमर्थ है । चंदा उसे धिक्कारत हुए कहती है -- " तू यही समझता था तो तूने मुझे क्यों इतना बहकाया ? तू नही जानता था मै नटनी हूँ और तू ठाकुर है ? तू मेरे ऊपर अहसान कर रहा था । " [71] नरेश और चंदा के प्रेम की शक्ति, निर्भयता, गांभीर्य, गहराई, नि:स्वार्थता आदि समाज की प्रेम सम्बन्धी धारणाओं पर आघात करती है । चंदा जानती है कि उसके और नरेश के मानवोचित प्रेम मार्ग में जो मुश्किलें हैं इसके भूल में सामाजिक विषमता तथा ठाकुर का अधिकार है । परन्तु चंदा हार नहीं मानती । नरेश को पाने के लिए तथा उसके योग्य बनने के लिए एवं दरिद्रता की दूरी को दूर करने के लिए अधिकार और धन चाहती है । इसलिए चंदा अधूरे किले के खजाने को हासिल करने की कोशिश भी करती है । लेकिन वह सफल नहीं होती । चंदा और नरेश के बढ़ते हुए प्रेम के कारण दोनों जातियों में मारपीट भी होती है । परन्तु चंदा अपने मन से नरेश को हटा नहीं सकती । वह नरेश से एकनिष्ठ रहती है । चंदा नरेश की पत्नी नहीं बल्कि चंदी बनकर रहना भी स्वीकार करती है । समाज चंदा के मन की व्याकुलता, तड़प, प्यार की गहराईयाँ, उदात्तता को नही समझ सकता । अन्त में उसके प्रेम की परिणती दर्दनाक होती है । चंदा आक्रोश करती है किन्तु उसे कहीं भी मुक्ति का उपाय नहीं दिखाई देता । नरेश और चंदा सिकंचों पर, सिर पटक-पटक कर खून बहाते हैं । चंदा अमर प्रेम के लिए अपना आत्मसमर्पण कर के प्रेम की ऊँचाईयों तथा शिखर को पा लेती है ।

ठकुरानी (कब तक पुकारूँ) यौन तृप्ति, मानसिक सुख के लिए दरबान की आशिक हो जाती है । और यायावर जीवन अपना ने के लिए अपनी जाति, कुल, मान, मर्यादा, अधिकार को त्याग देती है तथा खानाबदोश करनटों में आश्रय लेती है । बेला और सुखराम के पिता में वासनिक, शारीरिक सम्बन्ध है । फिर भी उन में समर्पण भावना है जैसे की सुखराम के पिता के लिए बेला अपने तन का सौदा करती है । परिवार के लिए पराये मर्दों के साथ रातें बिताती है आदि द्वारा उनका प्रेम मानसिक गहराई तक जाता है । सौनो इसीला से प्यार करती है क्योंकि वह उनके

जवानी का यार है इसलिए सौनो इसीला से बन्धी रहती है । लेकिन अपना शरीर औरों को दे देती है ।

नीलूफर (मुर्दो का टीला) श्रेष्ठि मणिबन्ध से प्रेम नहीं करती बल्कि सत्ता वैभव पाने के लिए उसकी अंकशायिनी बन जाती है । वह एक अरब लड़के से भी प्रेम करती है । किन्तु सिर्फ स्वादिष्ट भोजन पाने के लिए । पुरूष के प्रति नीलूफर का आकर्षण शारीरिक सम्बन्धों के लिए है । नीलूफर प्यारी की गहराई को नहीं जानती क्योंकि पुरूष उसके सुन्दर शरीर को चाहता है मन को नहीं । श्रेष्ठि मणिबन्ध दूसरी स्त्री (वेणी) से बन्ध जाता हे तथा उसक द्वारा नीलूफर उपेक्षित रहती है । उपेक्षित होने के पश्चात् नीलूफर को दासत्व तथा नारी मर्यादा का एहससा होता है । प्रेम तथा अधिकार की वेदना से वह कराह उठती है । हेका से कहती है - " तू नहीं जान सकती । तेरे अपाप ने तुझे धोका नहीं दिया । एक बार भी तेरे हृदय में हलचल नहीं हुई होगी । " [72] नीलूफर के विचार से गायक विल्लिभित्तुर के षड़यंत्र से ही उसे उपेक्षित होना पड़ा है । किन्तु सत्य प्रकट हो जाने पर नीलूफर स्वयं गायक विल्लिभित्तुर की निश्चलता पर मोहित हो जाती है । गायक के प्रभावशाली व्यक्तित्व में उसे मानवता की झलक दिखाई देती है । इस कारण उसके मन में गायक के प्रति सहज प्रेम भावना पैदा होती है । नीलूफर गायक के साथ गृहस्थी जीवन का सुख पाने की कामना करती है । नीलूफर अपने प्रेमी गायक से अपने भूतकालीन घृणित जीवन की किसी भी घटना को नहीं छिपाती । उसे कितने सारे पुरूषों ने उपभोग लिया है लेकिन नीलूफर की दर्दभरी कहानी सुनकर गायक विल्लिभित्तुर के मन में नीलूफर के प्रति मानवोचित प्यार उमड़ने लगता है । वह नीलूफर का स्वीकार करता हे । नीलूफर का प्यार भी आत्मिक धरातल पर उतर जाता है । सच्चे प्यार को नीलूफर महसूस करने लगती है। नीलूफर की प्रेम के बारे में यह धारणा है कि प्रेम में तन और मन दोनों का आकर्षण महत्वपूर्ण है ताकि मन शरीर से अलग नहीं है -- " मैं तो उसे प्रेम नहीं मानती जिस में शरीर भी मिला हुआ न हो । मन में विचार कर लेने से ही तो कोई बात हो नहीं जाती । उल्टे एक ढोंग हो जाता है । " [73] गायक विल्लिभित्तुर का प्यार पाने के लिए नीलूफर को कठोर यातनाओं का सामना करना पड़ता है । बरसों के इंतजार में उसे गायक से सच्चा प्यार मिलता है । नीलूफर को लगता

है कि दुनिया की हर खुशी को पा लिया है तथा वह दुनिया के गम को भूल जाती है । नीलूफर हेका से प्रेम के बारे में कहती है -- " प्रेम वह नहीं जो मस्ती में हो वरन विवशता में जिसका जन्म हो, कठोरताओं में जिसकी अग्निपरिक्षा हुआ करे । " [74] नीलूफर किसी भी कीमत पर गायक और उसके प्रेम को खो देना नहीं चाहती । अपने प्रिय को बचान के लिए वेणी के लिए जाती है । परन्तु वेणी समझ नहीं सकती । प्यारी की ऊँचाईयों तक पहुँचने के लिए नीलूफर को अपना आत्मसमर्पण करना पड़ता है ।

हेका (मुर्दो का टीला) और अपाप बचपन के साथी है । उन का एक दूसरे के प्रति जो आकर्षण है वह स्वाभाविक है लेकिन दास समाज में प्रेम करना भी मना हे । और ऐसी स्थिति में दोनों का प्रेम पलता है । हेका और अपाप को अपने प्रेम को आबाद रखने के लिए उन्हें अपने जिन्दगी की बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है जैसे - नील के खेतों में मालिक के द्वारा कोड़से पिटना, अपाप के सामने मणिबन्ध का हेका को अपने कक्ष में ले जाना, अक्षय प्रधान द्वारा शारीरिक एवं मानसिक शोषण, मणिबन्ध द्वारा मारपीट आदि । इतनी मुसीबतों को सहकर भी हेका और अपाप का प्यार कम नहीं होता बल्कि बढ़ता ही जाता है । जब श्रेष्ठि मणिबन्ध अपाप को हेका से अलग करके उसकी बिक्री करता है तब हेका विव्हल हो जाती है । नीलूफर की सहायता से अपाप को वापिस लाया जाता है । हेका का अपने शरीर पर भी अधिकार नहीं है, कितने मर्द उसके साथ खिलवाड़ करते हैं लेकिन हेका अपने प्रेमी अपाप का प्यार एवं साथ के लिए जुल्म और शोषण को सह लेती है । पर अपाप के सिवा अपना मन किसी और को नहीं देती । बिकट स्थिति में भी दोनों एक दूसरे के साथ नहीं छोड़ते । किन्तु अन्त में कर्तव्य पालन के लिए दोनों को जुदा होना पड़ता है ।

वेणी (मुर्दो का टीला) द्रविड गायक विल्लिभित्तुर से आत्मिक प्रेम करती है तथा उसके प्रति एकनिष्ठ है । कीकटाधिपति वेणी को अपनी अंकशायिनी बनाना चाहता है । लेकिन वेणी और गायक एक दूसरे के बगैर जिन्दा नहीं रह सकते । अतः अपने प्यार को बचाने के लिए

दोनों सब कुछ त्यागकर भिखारी जीवन जीने के लिए बाध्य हो जाते हैं । परन्तु वेणी कामलिप्सा एवं वैभव के कारण अपने आत्मिक प्रेम को भूल जाती है तथा बलिष्ठ और धनी पुरूष श्रेष्ठि मणिबन्ध पर आसक्त हो जाती है । वेणी के विचार से जो पुरूष शारीरिक और भौतिक सुख देता है वही सच्चा प्रेमी है । इसी विचार के कारण वेणी प्रेमिका से मणिबन्ध की दासी बन जाती है । पलभर के सुख को ही वेणी जीवन समझकर मणिबन्ध के प्यार की नशा में डूबी रहती है । अन्त में उसे एहसास हो जाता है कि मणिबन्ध का प्यार चंद पलों के लिए है किन्तु गायक विल्लिभित्तुर का प्रेम जीवन के अन्त तक साथ देनेवाला था । उसके प्रेम में तृप्ति एवं शान्ति थी । वेणी गायक विल्लिभित्त्तर के प्रेम के लिए आत्मसमर्पण कर देती है ।

चंद्रा (मुर्दो का टीला) विद्रोह में गायक का साथ देती है । गायक की वीरता को देखकर चंद्रा उस से प्रेम करने लगती है । युद्ध में पराजित होने पर बचा हुआ जीवन गायक के प्रेम के सहारे बिताना चाहती है तथा उसे समर्पित होना चाहती है । " ... अब कोई तृष्णा शेष नहीं रही । ... चलो यह थोडा-सा पथ है इसे चलकर ही काट दे ... । " [75] लेकिन अपने प्यार का इजहार करने से पहले ही चंद्रा मणिबन्ध के सैनिकों द्वारा मारी जाती है ।

4) विवाह

विवाह एक सामाजिक संस्था है । जैसे भूख, प्यास प्राकृतिक है वैसे ही हर प्राणी में काम-भावना प्राकृतिक एवं स्वाभाविक है । स्वच्छन्द कामतृप्ति के लिए समाज मान्यता नहीं देता । इसलिए कामतृप्ति एवं वंशवृद्धि के लिए विवाह अनिवार्य है । विवाह द्वारा काम-भावना को सीमित एवं समाजमान्य किया जाता है । विवाह परिवार एवं समाज संघठन आधार भित्ती है । हर एक की विवाह के बारे में अपनी मान्यताएँ होती है और इन मान्यताओं के अनुसार व्यक्ति अपने सामाजिक कर्तव्य को निभाते हैं । आलोच्य उपन्यासों की निम्न जाति की नारियाँ विवाह को अपने जीवन में इतना महत्व नहीं देती जितना की उच्च जाति की नारियाँ देती हैं । विवाह उच्च जाति की नारियों के जीवन का एक अहम हिस्सा होता है । उनका विवाह एक बार ही होता है । समाज उन्हें

दोबारा शादी करने की इजाजत नहीं देता । और विवाह विच्छेदन के लिए भी उन्हें बहुत सारी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है । इनकी शादी भी माँ-बाप की मर्जी से होती है । ' कब तम-तक पुकारूँ ' में करनट जाति की विवाह के बारे में धारणाएँ अलग है । इनकी शादी दोनों की मर्जी से होती है तथा जब चाहे विवाह विच्छेदन भी कर लेते हैं । करनटों में शादी करना बहुत आसान समझते हैं । सूसन कजरी को बताती है कि विवाह करना बड़ी मुश्किल बात है और पूछती है कि तुम्हारे समाज में पति को छोड दिया जाता है क्या ? तभी कजरी कहती है -- " सरकार उसमें कठिन की क्या बात है ? .. मैं नटनी हूँ छोड़ सकती हूँ । " [76] कजरी अपने नपुसंक पति कुरी से आसानी से नाता तोड़कर सुखराम से ब्याह कर लेती है तथा अन्त तक पत्नी के कर्तव्य का पालन करती है । कजरी के विचार से विवाह बिरादरी की बात है किन्तु नारी के जीवन में विवाह बढ़कर भी और बातें हैं जैसे - नारी का माँ बनना चाहे वह विवाह के पहले ही माँ क्यों न बन जाय । गर्भवती सूसन की शादी की चिन्ता सुखराम को सताती है किन्तु कजरी सूसन की शादी के बारे में निश्चिंत है । वह समझती है कि सूसन की ऐसी स्थिति में उसका विवाह करने में कोई दिक्कत नहीं आ सकती । सुखराम की चिन्ता को व्यर्थ समझते हुए कजरी कहती है -- गर्भवती होने से क्या होता है ? " मैं अपना करके दिखान दूँ तुझे । " [77] विवाह के बारे में कजरी की यह धारणा हे कि विवाह के पश्चात् ही नारी सयानी और समझदार बन जाती है ।

चंदा (कब तक पुकारूँ) का यह मानना है कि विवाह करते समय पुरूष और नारी की रजामंदी अनिवार्य है । अगर शादी किसी एक की मर्जी के खिलाफ हो जाये तो ऐसा विवाह ज्यादा दिनों तक टीक नहीं पाता । चंदा तो ऐसे विवाह को विवाह नहीं मानती । उसके विचार से दो दिलों का मिलन ही सच्चा विवाह है । चंदा यह बात स्वीकार नहीं करती कि प्रेम किसी एक से किसा जाए और विवाह किसी दूसरे से किया जाय । जिसे प्यार किया है, उससे ही विवाह करना चाहिए । उसके यही विचार समाज की धारणाओं पर करारी चोट करते हैं । किन्तु चंदा समाज के ड़र से अपने विचारों को नहीं बदलती । सुखराम चंदा का विवाह नीलू करनट से कर देता है । लेकिन यह विवाह चंदा की मर्जी से नहीं होता । इसलिए वह नीलू को अपना पति नहीं मानती बल्कि नरेश को मन-ही-मन अपना पति मानती है तथा ससुराल से मयके चली आती है । समाज की

परम्परा के अनुसार नरेण चंदा को परायी मानता है । लेकिन चंदा समाज की परम्पराओं को नहीं मानती । वह कहती है -- " पर मैं अब भी वैसी ही हूँ । मैंने उससे आज तक जब नाता न जोड़ा तो मै पराये कैसे हुई ? " [78] सूसन और चंदो के अनुसार विवाह करते समय समाज व्यक्ति के गुण - दोषों को नहीं परखता बल्कि खानदान, जात और वैभव को देखता है । वे दोनो भी ऐसे विवाह के खिलाफ हैं ।

प्यारी (कब तक पुकारूँ) का मानना है कि नारी के लिए अन्तिम सहारा पति ही होता है । इसलिए वह विवाह को आवश्यक मानती है । प्यारी अपनी मर्जी से सुखराम के साथ विवाह कर लेती है । प्यारी जानती है कि जब तक उसमें जवानी है तब तक समाज में कोई भी पुरूष अपना सकेगा परन्तु जवानी समाप्त होते ही उसे कोई पूछेगा तक नहीं । अतः सुखराम ही उसके हर सुख दुःख का साथी है । वही एक संबल है जिसके सहारे प्यारी जीवन बिता सकती है। और इसलिए अन्त तक प्यारी अपने पति सुखराम से बंधी रहती है ।

सूसन (कब तक पुकारूँ) विवाह को पवित्र बंधन समझती है । इसलिए वह विवाह का निर्णय सोच/समझकर लेना चाहती है । लेकिन सूसन का चरित्र कलंकित होने पर तथा कौमार्य भंग हो जाने पर वह स्वयं विवाह के पवित्र बन्धन में बन्धना नहीं चाहती ।

मुर्दो का टीला की दासी नारियों को समाज वैवाहिक जीवन। जीने के लिए इजाजत नहीं देता । श्रेष्ठि मणिबन्ध नीलूफर और वेणी को अपनी स्वामिनी बनाता है लेकिन उनके साथ विवाह नहीं करता । नीलूफर और हेका की यह धारणा है कि अगर हम मन से किसी को पतिरूप में स्वीकार करते हैं तो उसके लिए विवाह जैसे बाहय संस्कार आवश्यक नहीं है । नीलूफर बिना विवाह किये ही गायक विल्लिभित्तुर को अपना पति मानकर उसके साथ रहती है । वह कहती है -- " आज तू मेरे पास है पागल ? मेरे पास ... आज मैं सुहागिन हूँ । " [79] हेका भी अपाप के साथ विवाह किये बिना रहती है । दोनों भी अपने पत्नी-कर्तव्य को निभाती है ।

नीलूफर के विचार से विवाह ही नारी के जीवन की स्थिरता है । पति ही उसका असली सुख है । लेकिन पति के रूप में उसे स्वीकार करना चाहिये जो परम्पराओं के अनुसार शोषण करनेवाला नहीं बल्कि वह प्रेमी भी बन जाये । वेणी इसलिये विवाह को आवश्यक समझती है ताकि अपनी स्थिति बदल जाए । मणिबन्ध से विवाह करके वेणी अपने वैवाहिक जीवन भौतिक तथा मानसिक दृष्टि से सुखी बनना चाहती है ।

5) विवाह बाह्य सम्बन्ध तथा नैतिकता

मानव प्राणी के प्रबल काम-भावना की पूर्ति तथा स्त्री-पुरूषों के यौन सम्बन्धो पर समाज का कठोर नियंत्रण है । अतः इसलिए ही विवाह संस्था अस्तित्व में रही है । नारी अपने पति के अलावा तथा पति की मृत्यु के पश्चात् किसी अन्य पुरूषों से शरीर सम्बन्ध स्थापित करना समाज मर्यादा-ओंका उल्लंघन हैं । समाज ऐसे सम्बन्धों को त्याज्य एवं अनैतिक समझता है । ऐसे सम्बन्ध रखनेवाली नारी को समाज हीन समझता है ।

आलोच्य उपन्यासों की नारियाँ अन्य पुरूषों से यौन - सम्बन्ध रखना अनैतिक नहीं समझती क्यों कि यही उनके समाज की नीति एवं संस्कार है । ' कब तक पुकारूँ ' की भूमिका में राघवजी ने लिखा है कि " मैंने इनकी नैतिकता को समाज का आदर्श बनाकर प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि पाठकों के इसमें सेक्स को ऐसी जानकारी के रूप में हासिल करना चाहिए कि यह इनमें होता है । ... न इनके ये सामाजिक नियम शाश्वत है न हमारी नैतिकता के बन्धन ही शाश्वत है । " [80] ' कब तक पुकारूँ ' के करनट जाति की नारियाँ विवाह से पहले और विवाह के बाद भी कई पुरूषों से अपना तन बेचती हैं । इसे वे अपना पेशा समझती हैं । ऐसे सम्बन्ध रखने के लिए ये नारियाँ अपने पति की इजाजत लेना आवश्यक नहीं मानती । सौनो प्यारी से एक स्थान पर कहती है -- " ... अरी यह तो औरत के काम है । उसे बताने की जरूरत ही क्या है । " [81] शादी के पश्चात् भी प्यारी कंजरों में रातें बिताती हैं, अन्य पुरूषों को खुश कर देती

है, रूस्तमखाँ की रखैल बनती है । उसकी सुन्दर देह को पुरूष कामुक दृष्टि से देखते हैं । सुखराम यह बर्दाश्त नहीं करता किन्तु प्यारी का यह मानना है कि वह अपना शरीर औरों को दिखाती नहीं बल्कि दिख जाता है, इसमें उसका का दोष है, जवानी को तो बन्द करके रखा नहीं जाता । अन्य पुरूषों के शरीर सम्बन्धों का प्यारी सुखराम से खुलकर इजहार करती है । " अभी नहीं, मैं अभी थकी हूँ अभी तो बौहरे का बेटा गया है । " [82] ऐसा कहते हुए प्यारी लज्जा महसूस नहीं करती क्यों कि वह जो करती है वह आर्थिक प्राप्ति के लिए ही । बेला सुखराम के पिता के साथ विवाह होने के बावजूद पराये मर्दोंसे शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करती है । और इसलिए वह समाज तथा पति से भी ड़रती नहीं । बेला के विचार से अपना परिवार एवं पति की सुरक्षा के लिए अन्य पुरूषों से सम्बन्ध रखना जरूरी है । सौनो पति की मृत्यु के पश्चात् अपने दामाद से यौन - सम्बन्ध रखना अनुचित नहीं मानती तथा किसी के घर बैठ जाना अपनी जाति एवं समाज की नीति मानती है । चंदा विवाह के पश्चात् नरेश से सम्बन्ध रखना चाहती है । कजरी, सूसन, घूपो, विवाह बाहय सम्बन्धो को मान्य नहीं करता । उन्हें ऐसे सम्बन्ध अनैतिक लगते हैं ।

मुर्दो का टीला के दासी वर्ग की नारियाँ नीलूफर और हेका तत्कालीन समाज में सिर्फ मासपिण्ड है । उनका तन पुरूषों का खिलौना मात्र है । बचपन से ही उन्हें शरीर विक्रय का पाठ पढ़ाया जाता है । ये नारियाँ अन्य मर्दो से सम्बन्ध स्थापित करना अपना कर्तव्य समझती हैं । उनके लिए कोई भी बात नैतिक एवं अनैतिक नहीं होती । क्यों कि दासों के बाजारों में वे विवस्त्र होकर बिकने के लिए बाध्य हो जाती हैं । छोटी-छोटी जरूरतों की पूर्ति के लिए शरीर का सौदा करना पड़ता है । हेका को अपने प्रेमी अपाप को पहरेदार बनाकर श्रेष्ठि मणिबन्ध के बाहों में बँधना पड़ता है । बार-बार अक्षय प्रधान की हविश बुझानी पड़ती है । नीलूफर गायक विल्लिवित्तुर के सामने अर्धनंगी अवस्था में खड़ी होती है । गायक को नीलूफर का यह बर्ताव अजीब-सा लगता है । लेकिन नीलूफर को ऐसा करना लज्जास्पद नहीं लगता ताकि उसने आज तक कभी भी शर्म को महसूस नहीं किया । वेणी मन से गायक के साथ जुड़ी है फिर भी श्रेष्ठि मणिबन्ध से शरीर सम्बन्ध रखने में बुरा नहीं मानती तथा उसे समाज का भी ड़र नहीं । वीणा का पति व्यापारों मे व्यस्त रहता है इसलिए वीणा हमेशा नशापान करके महफिलों में शामिल होती है तथा अन्य पुरूषों से शरीर सुख की कामना करती है । वीणा को अपनी मर्यादा एवं कुलीनता का भी ध्यान नहीं रहता ।

निष्कर्ष

डॉ. रांगेय राघव के आलोच्य उपन्यासों की नारियों के जीवन दर्शन का पूर्णारूपेन अवलोकन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि ये नारियाँ निम्न जाति की हैं । अतः उनका जीवन नरक के समान है । समाज में इनकी कोई इज्जत या मूल्य नहीं हैं । किन्तु ये नारियाँ ऐसे बेबस, लाचार जीवन को उदात्त दृष्टि से देखती हैं । लाखों समस्याओं एवं कठिनाईयों के बावजूद भी वे जीवन के प्रति आस्था बनाए रखती हैं । जीवन पथ पर अड़िग रहकर अपने अधिकार प्राप्ती के लिए संघर्ष करती है। प्राचीन काल से समाज का नारी के प्रति जो दृष्टिकोण हैं एवं निर्ममता से शोषण हो रहा है तथा पुरूष वर्ग अपने स्वार्थ के खातिर नारी को अपने हाथ की कठपुतली तथा भोग्या बनाता है । आलोच्य उपन्यासों की नारियों ने पुरूष वर्ग की स्वार्थी वृत्तियों को पहचाना है । परम्परा से स्त्री-पुरूषों में जो भेद, विषमता है यह इन नारियों को स्वीकार नहीं हैं । ये नारियाँ स्त्री-पुरूष समानता में विश्वास रखनेवाली हैं । अपने शोषित एवं रूढ़िग्रस्त जीवन में ये नारियाँ परिवर्तन करना चाहती है । और इसलिए इन नारियों का विद्रोह, संघर्ष जीवन के रणक्षेत्र में चलताउं है । इस जीवन संघर्ष में उन्हे कमजोर करने की कोशिश भी की जाती है । किन्तु ये नारियाँ जीवन के प्रति अपना हौसला तथा आत्मविश्वास कायम रखती है । अतः यह नारियाँ जीवन संघर्ष में हारकर मिट जाती हैं । लेकिन हार में ही उनकी जीत छिपी हुई है । प्यारी, कजरी, सौनो, चंदा धूपो (कब तक पुकारूँ) अपने अभावग्रस्त जीवन से समझौता करके सन्तुष्ट रहने की कोशिश करती है । नीलूफर, हेका (मुर्दो का टीला) दासी जीवन से घृणा करती है तथा विद्रोही बन जाती है । वेणी और वीणा (मुर्दो का टीला) अपना जीवन ऐशो-आराम के साथ गुजारना चाहती है । अतः ये नारियाँ अपना जीवन दूसरों के लिए जीना चाहती हैं ।

' कब तक पुकारूँ ' की नारियाँ आधुनिक काल की नारियाँ है । फिर भी वे सुसंस्कृत समाज से दूर और अछूती है । ' मुर्दो का टीला ' की नारियाँ प्रागैतिहासिक कालीन नारियाँ हैं । अतः इन उपन्यासों की सभी नारियाँ आस्थापरख, मूर्तिपूजक एवं ईश्वर को माननेवाली हैं । बेला, सौनो, कजरी, प्यारी, चंदा (कब तक पुकारूँ) महादेव, हनुमान, पीर, मजार तथा अन्य देवताओं

को मानती हैं । इनके प्रति उनके मन में श्रद्धा, विश्वास हैं । सूसन, ख्रिश्चन है तथा वह क्राईसिस को मानती है । नीलूफर, हेका, (मुर्दो का टीला) मिश्री देवता ओसिरिस और आईसिस की सत्ता को मानती है । कोई उनके देवताओं का अपमान करें यह बात नीलूफर बर्दाश्त नहीं करती । वेणी, वीणा, षोड़शी, महादेव, महामाइ, अहिरराज, अश्वत्थ्य आदि देवताओं के प्रति मन में आस्था रखती हैं । बिकट स्थिती में ये नारियाँ अपने देवताओं से याचना करती हैं तथा उस स्थिती से उभारने की कामना करती हैं ।

ईश्वर की आस्था एवं श्रद्धा के कारण आलोच्य नारियाँ कुछ मात्रा में भाग्य पर भी विश्वास करती हैं । लेकिन किसी विशिष्ट परिस्थिति में ही भाग्य-विधाता को याद करती हैं । अपना सारा जीवन भाग्य के भरोसे नहीं छोड़ देती बल्कि भाग्य से लड़ना श्रेयस्कर मानती है तथा कर्म पर विश्वास करती हैं । ये नारियाँ जानती है कि केवल भाग्य को मानना निष्क्रियता है । अतः इच्छित कर्म फल न मिलने पर जरूर भाग्य को दोष देती हैं । प्यारी, कजरी, सौनो, बेला, चंदा ((कब तक पुकारूँ) नीच जात होना भाग्य समझती हैं । सूसन और चंदा पूर्वजन्म पर विश्वास करके खुद को ठकुरानी मानती हैं । धूपो अपने पर हुए आत्याचारों को पूर्वजन्म का पाप मानती हैं । नीलूफर हेका (मुर्दो का टीला) दासी जीवन भुगतना, वेणी फिर से मणिबन्ध से मिलना अपना भाग्य समझती है ।

आलोच्य नारियाँ उपजीविका के लिए स्वयं कुछ काम करती हैं क्योंकि वे जीवन यापन के लिए दूसरों पर निर्भर नहीं रहना चाहती । इन नारियों के पास सुन्दर शरीर और यौवन है । परम्परानुसार उनका काम शरीर बेचना है । ऐसा करने की उनकी इच्छा नहीं होती फिर भी विवशतावश उन्हे यह काम करना पड़ता हैं । कजरी (कब तक पुकारूँ), नीलूफर (मुर्दो का टीला) ऐसे कामों से छुटकारा पाती है । किन्तु उन्हें आभावों का सामना करना पड़ता है । वेणी भी इससे बचने के लिए दर-दर की ठोकरें खाती है लेकिन तन-विक्रय से बच नहीं सकती । चंद्रा को जीवन - यापन के लिए वेश्या व्यवसाय अपनाना पड़ता है ।

दास एवं करनट सभ्य समाज से अछूते हैं । इन जातियों की नारियाँ समाज से पीड़ित

है । समाज के मर्द इन नारियों को अपनी स्थायीर सम्पत्ति समझकर उनका उपभोग लेते हैं । समाज इन नारियों का शारीरिक एवं मानसिक शोषण करता हैं । समाज में रहकर भी आम नारियों की तरह नीच नारियों को सम्मान, संरक्षण एवं आदर नहीं मिलता । समाज इन नारियों को हमेशा हेय समझकर उनकी प्रताड़ना करता है । आलोच्य नारियाँ समाज के घात-प्रतिघात एवं तिरस्कार आत्याचारों को सहते हुए शोषक समाज से प्रतिशोध लेना चाहती है तथा क्रान्ति कर देना चाहती है । समाज यह नहीं समझता कि ये नारियाँ भी मनुष्य हैं, उनमें भी स्त्री का हृदय हैं तथा वे भी स्वयं को किसी को समर्पित कर देना चाहती हैं । ये नारियाँ भी समाज में इज्जत से रहना चाहती हैं । इसलिए सौनो (कब तक पुकारूँ) प्यारी का विवाह ठाकुर खानदान से सम्बन्धित सुखराम से कर देना चाहती है। आलोच्य नारियाँ समाज का घृणित पक्ष एवं जुल्मी परम्पराएँ, धर्मान्धता पर कड़ा व्यंग्य कसती है । कजरी, (कब तक पुकारूँ) चक्खन से इसी बात को लेकर फटकारती है । सामाजिक विषमता एवं गलत जगह पर पलने के कारण चंदा (कब तक पुकारूँ) वेश्या जीवन बिताने के लिए बाध्य हो जाती है । दासी नारियों के साथ तत्कालीन समाज पशु से भी गया बीता बर्ताव करता है । इसलिए तो नीलूफर और हेका (मुर्दा का टीला) विवस्त्र होकर बिकने के लिए बाजारों में खड़ा होना पड़ता है । इन नारियों के विचार से समाज ही उन्हें नीच बनने के लिए विवश करता है तथा उन्हें दोषी मानता है । समाज के खोखलेपन का ये नारियाँ परदापाश कर देती हैं । ये नारियाँ पिछड़ी हुई हैं अतः वे राजनीति को समझ नहीं सकती । फिर भी उनके मन में देशभक्ति हैं । ये नारियाँ इतना जानती हैं कि जो उन पर हुकूम चलाता है वही राजा है । समाज की विषमता, असमानता, पूँजीवादी लोगों द्वारा सत्ता, अधिकारों के बलपर गरीबों का शोषण करना विवेच्य नारियों को बर्दाश्त नहीं होता । उनके मन में भी हुकूमत करने की लालसा पैदा होती हैं । ताकि आत्याचारियों से बदला ले सके तथा अपने हक को हासिल कर सके । प्यारी (कब तक पुकारूँ) रूस्तमखाँ से हुकूमत को पा लेती है । नीलूफर (मुर्दा का टीला) श्रेष्ठि मणिबन्ध की अंकशायिनी बन जाती है । इन नारियों के विचार से इस संसार में हर मनुष्य को इज्जत तथा सम्मानपूर्ण जीवन जीने का अधिकार मिलना चाहिये । शोषण को समूल उखाड़ देने के लिए ये नारियाँ विद्रोही बन जाती हैं । प्रस्तुत नारियों के अनुसार प्रेम उनके जीवन का अनिवार्य अंग हैं । वस्तुतः चित्रित

वस्तुतः चित्रित स्त्री-पुरूषों के बीच जो प्रेम हैं, उसका प्रारंभ शारीरिक आकर्षण में हैं । यह प्रेम अधिकतर स्त्री-पुरूषों के बीच के यौन-आकर्षण के रूप में व्यक्त हुआ है । किन्तु परस्पर मानसिकता के कारण यौन-आकर्षण को मानसिकता की गहराई, ऊँचाईयाँ और गरिमा मिलती हैं । प्रायः सभी तरह के प्रेम का मार्ग बेहद वेदना एवं कठिनाइयों का है । इस के प्रेम की अन्तिम परिणति मृत्यु में होती है । प्यारी, कजरी और सुखराम (कब तक पुकारूँ), अपाप और हेका (मुर्दो का टीला) आदि के प्यार को भव्यता, दिव्यता, मिली है । किन्तु अन्य सब प्रायः असन्तुष्ट एवं अतृप्ति में समाप्त हो गये हैं । ये नारियाँ विवाह को आवश्यक मानती हैं किन्तु अनिवार्य नहीं समझती । विवाह के पश्चात् अन्य पुरूषों से यौन-सम्बन्ध स्थापित कर देना ये नारियाँ अनुचित नहीं मानती । क्योंकि उनके समाज की यही नीति है एवं संस्कार है । नैतिक, अनैतिक आदि बातों को ये नारियाँ समझ नहीं सकती क्योंकि उनके समाज में कोई बात नीतिमूल्यों के आधार पर नहीं होती । इसलिए ये नारियाँ समाज में खुले आम अनैतिक काम करती हैं ।

संक्षेप में आलोच्य उपन्यासों की नारियों की जीवनदृष्टि मानवतावादी है । वे जीवन की ओर आशावादी दृष्टि से देखती हैं तथा अपना जीवन स्वाभिमान के साथ बिताना चाहती हैं । इन नारियों के जीवन में कृत्रिमता नहीं है । मानवीय गुणवगुणों से युक्त स्वाभाविक चरित्र है ।

संदर्भ

1.	डॉ. देवराज	भारतीय दर्शन शास्त्र का इतिहास पृ. 169
2.	डॉ. रांगेय राघव	कब तक पुकारूँ, पृ. 50
3.	वही, पृ. 54	
4.	वही, पृ. 46	
5.	वही, पृ. 105	
6.	वही, पृ. 422	
7.	वही, पृ. 423	
8.	वही, पृ. 463	
9.	वही, पृ. 562	
10.	डॉ. रांगेय राघव	मुर्दो का टीला, पृ. 257
11.	वही, पृ. 279	
12.	डॉ. रांगेय राघव	कब तक पुकारूँ पृ. 143
13.	वही, पृ. 147	
14.	वही पृ.211	
15.	वही पृ. 439	
16.	डॉ. रांगेय राघव	मुर्दो का टीला, पृ. 5
17.	वही पृ. 49	
18.	वही पृ. 107	
19.	वही, पृ. 133	
20.	डॉ. रांगेय राघव,	कब तक पुकारूँ पृ. 196
21.	वही, पृ. 167	
22.	वही, पृ. 190	
23.	डॉ. रांगेय राघव,	मुर्दो का टीला पृ. 8

24. डॉ. रांगेय राघव — कब तक पुकारूँ पृ. 45
25. वही, पृ. 48
26. डॉ. रांगेय राघव — मुर्दो का टीला पृ. 228
27. डॉ. रांगेय राघव — कब तक पुकारूँ पृ. 26-29
28. वही, पृ. 48
29. वही, पृ. 288
30. वही, पृ. 286
31. वही, पृ. 104
32. वही, पृ. 200
33. वही, पृ. 236
34. वही, पृ. 237
35. वही, पृ. 237
36. वही, पृ. 355
37. डॉ. रांगेय राघव, — मुर्दो का टीला, पृ. 228-29
38. वही पृ. 84
39. वही, पृ. 228
40. वही, पृ. 349
41. वही पृ. 349
42. डॉ. रांगेय राघव, — कब तक पुकारूँ, पृ. 529-30
43. डॉ. रांगेय राघव — मुर्दो का टीला पृ. 85
44. वही, पृ. 211-12
45. वही पृ. 271
46. वही, पृ. 296
47. वही, पृ. 249
48. वही, पृ. 302

49. मार्क्स, एंगेल्स मार्क्सेम्ज, अ. स. पृ. 16

रामविलास शर्मा भाषा साहित्य और संस्कृति पृ. 196

50. शिवकुमार मिश्र — यथार्थवाद पृ. 59

51. डॉ. रांगेय राघव — कब तक पुकारूँ पृ. 53

52. वही, पृ. 54

53. वही, पृ. 227

54. डॉ. रांगेय राघव — मुर्दो का टीला, पृ. 33

55. वही, पृ. 71

56. वही, पृ. 85

57. वही पृ. 72

58. वही, पृ. 80

59. वही, पृ. 227

60. वही, पृ. 280

61. वही, पृ. 284

62. डॉ. देवराज, — संस्कृतिका दार्शनिक विवेचन, पृ. 353

63. बायरन, — दि न्यू डिक्सनरी ऑफ थॉटस : लव, पृ. 351-52

64. डॉ. रांगेय राघव, — कब तक पुकारू पृ. 64

65. वही, पृ. 51.

66. वही, पृ. 53

67. वही, पृ. 83

68. वही, पृ. 72

69. वही पृ. 465

70. वही, पृ. 71

71. डॉ. रांगेय राघव, कब तक पुकारूँ, पृ. 582
72. डॉ. रांगेय राघव, मुर्दो का टीला पृ. 50
73. वही, पृ. 232
74. वही, पृ. 257
75. वही, पृ. 349
76. डॉ. रांगेय राघव, कब तक पुकारूँ, पृ. 523
77. वही, पृ. 593
78. वही, पृ. 583
79. डॉ. रांगेय राघव, मुर्दो का टीला, पृ. 235
80. डॉ. रांगेय राघव, कब तक पुकारूँ पृ. 5
81. वही, पृ. 45
82. वही, पृ. 50